कुम्भ लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में '**लग्न**' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा है। इसी पर फ़लित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अत: इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह हैं, ग्रह नौ हैं, फलत: 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनीं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है–'**संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।**' वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलत: ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की **द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में कुल 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छ: सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है, इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा-सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या बृहस्पति+चंद्र की युति से बना **गजकेसरी योग** सदैव एक-सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित्त एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! **गजकेसरी योग** का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? **गजकेसरी योग** की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेंगी। अकेला **गजकेसरी योग** 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। **गजकेसरी योग** की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुंभलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि **'कुंभलग्न'** में **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न', **'कर्कलग्न'**, **'वृषलग्न'**, **'तुलालग्न'**, **'कन्यालग्न'**, **'मकरलग्न'**, **'वृश्चिकलग्न'**, **'मिथुनलग्न'**, **'धनुलग्न'**, **'सिंहलग्न'**, **'मीनलग्न'** प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हो रहा है। अब **'कुंभलग्न'** की पुस्तक को पाठकों के हाथों में सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। कुंभलग्न में पैगम्बर मोहम्मद, श्री रामकृष्ण परमहंस, लंकापति रावण, प्रधानमंत्री भण्डारनायके, मोहम्मद अली जिन्ना, अब्राहिम लिंकन, मानव संसाधन मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी, डॉ बी.वी. रमण (ज्योतिषी), अभिनेता अमिताभ बच्चन, शिवाजी गणेशन, प्रिंस वेल्स (इंग्लैण्ड) जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। कुंभलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। कुंभलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

एक और बड़ा फायदा इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों को यह है कि संधिगत लग्न में प्राय: दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है। कई बार एक जातक की दो-तीन प्रकार की कुण्डलियों में भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्राय: भिन्न-भिन्न ज्योतिषयों के पास जाता है और भिन्न-भिन्न बातों से फलादेश से व्यक्ति पूर्णत: भ्रमित हो जाता है। ऐसे में यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग-अलग भावों की ग्रह स्थिति-जन्म कसौटी पर कस कर देखें। आपको स्वत: ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन-सा है? यदि आपको इस प्रकार के संकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह एवं अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।**

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्कलग्न**" के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. **हस्तरेखा विभाग**–सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुई। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे हैं। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं। यह विभाग भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में अपने ढंग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहां से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. **ज्योतिष विभाग**–इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई, समय-चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्ण रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है। डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं।

3. **वास्तु विभाग**–हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़-फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं।

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग–अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गांरटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दु:ख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पंचांग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते हैं। बहुत से पत्रों में लम्बी-चौड़ी कहानियां एवं व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक लिखा होता है, जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत-सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एवं पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्राय: ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होंगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे, पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे-चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस में बैठने की जगह नहीं बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र-व्यवहार करें, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेंजे।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्राय: सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक संस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है। अत: बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करें।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल-098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)—डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार-प्रसार, जात-पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके, इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

—आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं है। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) बृहस्पतिकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरह-वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है–

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

;Fp fo@r-o@Z lrkoB leskoQZA1 A

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् = ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्पुसंक-दृष्टौ स्यान्निक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष–1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, मुम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है—**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआं, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रकौं यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञान तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृ. 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदोपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चित रुप से ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान बृहस्पति कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप बृहस्पति के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में बृहस्पति का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या बृहस्पतिमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह- (प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 140
2. यथा काष्ठमय: सिंहो यथा चित्रमयो नृप:।
   तथा वेदावधीतोऽप्यज्योतिशास्त्रं बिना द्विजा:।।–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपा महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् बृहस्पतिः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि बृहस्पति रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशों अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे बृहस्पति की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
कुंभलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्मकुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का
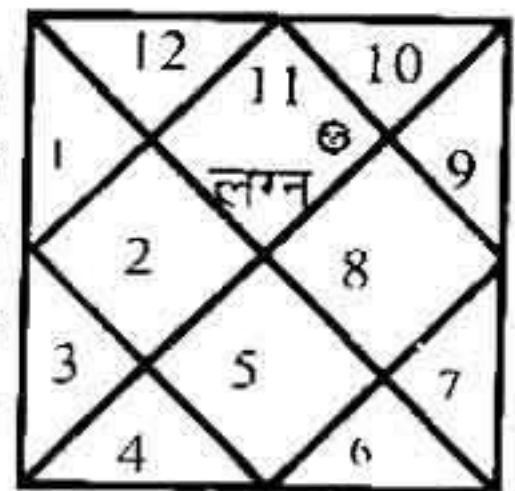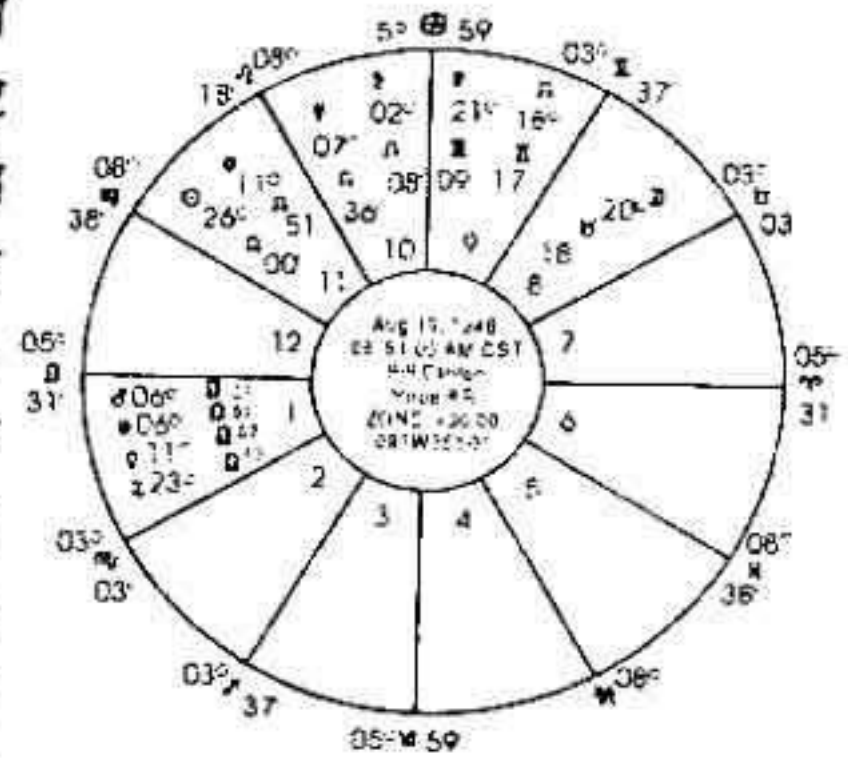
भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

12 10
1 के. | 11 लग्न | 9
चं. शु. 2 | 8
3 सू. बु. | 5 | 7 रा
4 गु. | श. | 6

वृष च.शु. मिथुन सू. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि कन्या मं.	तुला राहु	धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष च. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ			कर्क गु.
मकर	चेन्नई		सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 शुक्र 5 सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17
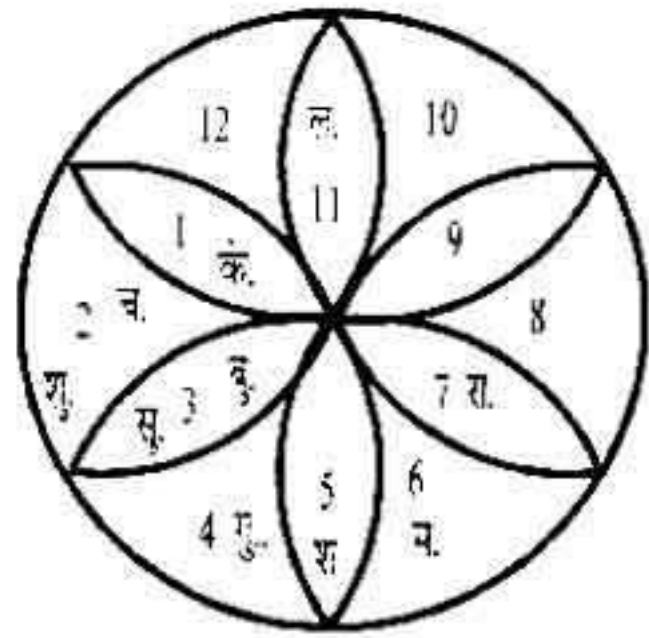
क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।

1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**''लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्''।**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप
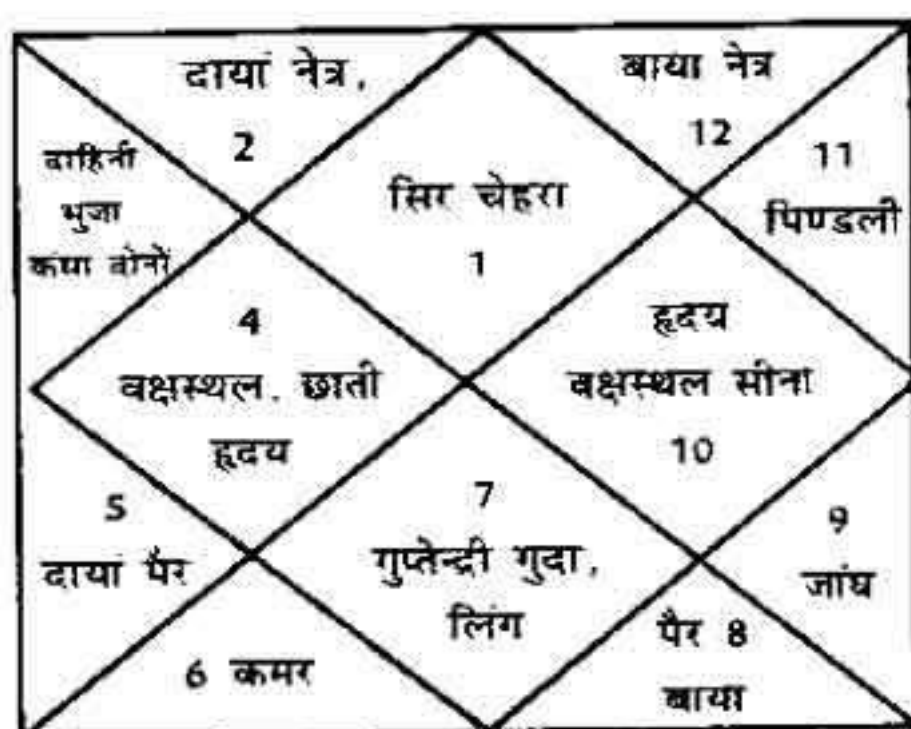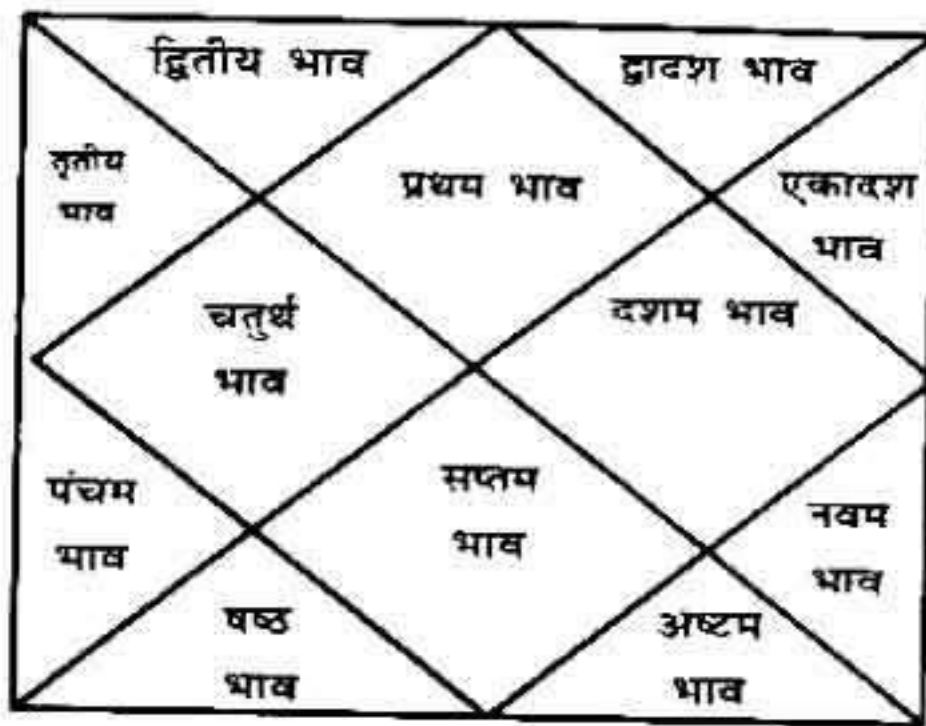
पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अत: अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या॥
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

लग्नवाराही

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः॥1॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सदा विशतु नो मनसेप्सितं यत्॥1॥

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मंगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चंद्रो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः।।2।।

सूर्य, शनि और मंगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान में हों तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र दूसरे भाव में हो तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।।2।।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।

सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रियं बृहस्पतिकवी रविजस्तृतीये।।3।।

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो यशस्वी होता है और मंगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एवं शनि यदि लग्न में तीसरे भाव में हों तो अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है।।3।।

चतुर्थभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्।।4।।

जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ तथा धन की वृद्धि होती है।।4।।

पंञ्चमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवबृहस्पतिवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम।।।5।।

जिसके लग्न से पंचम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाव वाला पुत्र होता है, शुक्र, चंद्रमा और बृहस्पति हो तो सुंदर एवं बुद्धिमान् बहुत पुत्र होते हैं।।5।।

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।
शुक्रोबुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्।।6।।

जन्मलग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मंगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश, शनि हो तो राजमान्य और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा

बृहस्पति हो तो रोगी और चंद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव वह सदा ही विकल रहता है।।6।।

सप्तमभावफलम्–

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्।।7।।

यदि जन्मलग्न से सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोड़ी संतान वाली होती है और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो उसकी स्त्री बहुत संतान वाली तथा अत्यंत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है।।7।।

अष्टमभावफलम्–

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्ध्या विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्।।8।।

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्मलग्न के आठवें भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग पर शस्त्राभिघात होता है और बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है।।8।।

नवमभावफलम्–

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्।।9।।

रवि, शनि और मंगल जन्म लग्न में नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति यदि नवम स्थान में हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप में धर्मकार्य में रहती है।।9।।

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।

चंद्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य, मंगल और शनि, यदि दशम भाव में हों तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है, चंद्रमा हो तो कीर्तिशाली, शुक्र हो तो बहुत पुत्रवाला तथा बुध और बृहस्पति हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है॥10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः।
सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति सधनं रविजः सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मंगल हो तो स्त्रीसुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं॥11॥

द्वादशभावफलम्–

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
कारणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चन्द्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चंद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, बृहस्पति हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है॥12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।
शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः॥1॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न में सूर्य या मंगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा,

शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, बृहस्पति में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्रयदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये।
वित्तेश्वरीमविधवां बृहस्पतिशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्क।।2।।

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हों तो वह स्त्री दुःख दारिद्रय से युक्त और बृहस्पति, शुक्र, बुध हों तो धनवती तथा भाग्यवती और चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है।।2।।

तृतीयभावफलम्–

शुक्रेन्दु भौमबृहस्पति सूर्यबुधास्तृतीये
कुर्यः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः।।3।।

जिस स्त्री के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम, सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है।।3।।

चतुर्थभावफलम्–

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्।।4।।

जिस स्त्री के मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो व अल्प दुग्ध देने वाली, चंद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन-भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्–

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां बृहस्पतिभार्गवौ च।

राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्क॥5॥

स्त्री के पंचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, बृहस्पति, शुक्र हों तो पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चंद्रमा से बहुत कन्याएं होती है॥5॥

षष्ठभावफलम्–

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवाः
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा॥6॥

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, बृहस्पति और मंगल इन ग्रहों में से कोई हो तो सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है॥6॥

सप्तमभावफलम्–

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधिं विदेशगमनं च यथाक्रमेण॥7॥

स्त्री के जन्मलग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, चंद्रमा, शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धन नाश, रोग, विदेश-गमन ये फल देते हैं॥7॥

अष्टमभावफलम्–

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः।
सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च॥8॥

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान में बृहस्पति और बुध हों तो पति से वियोग, चंद्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो बहुत संतान वाली तथा पति-प्रिया होती है॥8॥

नवमभावफलम्–

चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः॥9॥

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, बृहस्पति इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोग तथा शनि से विधवा और चंद्रमा से बहुत संतान वाली होती है।।9।।

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रति दिनकरश्च शनैश्चरश्च।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः॥10॥

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मंगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धन रहित तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्मलग्न से दशम भाव में हों तो धनवती तथा सौभाग्यवती होती है।।10।।

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां
पुत्रीमतीं च महितोऽर्थवतीं हि चंद्रः।
आयुष्मतीं सुरबृहस्पतिश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्॥11॥

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चंद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में बृहस्पति अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो धनवती होती है।।11।।

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुर्हि विधवां दिनकृद् दरिद्रां
चन्द्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।
साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से द्वादश स्थान में बृहस्पति हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्र, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हों तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त, पति में प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है।।12।।

अन्ययोगा:

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्।।1।।

लग्न में शनि और चंद्रमा हों, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है।।1।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।
तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः।।2।।

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो उसका भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है।।2।।

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः।।3।।

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हों और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में उसका धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है।।3।।

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः।।4।।

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भवों में पाप ग्रह हों और दूसरे भावों में शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है।।4।।

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति।।5।।

जिसके षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।।5।।

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति।।6।।

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है।।6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुध: शुक्रोऽथ वा शशी।
सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नर:।।7।।

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र या चंद्रमा हो उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राज्यमान्य होता है।।7।।

कुंभे शौरिधने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमा:।
मकरे च यदा शुक्र: स भुङ्क्ते पैतृकं धनम्।।8।।

कुंभ में शनि, धन भाव में सूर्य, मेष में चंद्रमा और मकर में शुक्र हो तो पिता के धन का भोग करने वाला होता है।।8।।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्र बृहस्पति:।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जात: किं करिष्याति।।9।।

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मंगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।।9।।

त्रिभि: स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुश्चगतैनृप:।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दास: त्रिभिरस्तैर्निरर्थक:।।10।।

जन्म समय में 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मंत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा, 3 ग्रह नीच के हों तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है।।10।।

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पति:।
दशमेऽङ्गरको यस्य स जात: कुलदीपक।।11।।

जिसके लग्न में शुक्र-बुध और केन्द्र स्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है।।11।।

आदौ जीव: सित: प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धन:।।12।।

लग्न में बृहस्पति, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है।

क्रुराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।
दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्कर:।।13।।

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है।।13।।

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत्।

राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति॥114॥

लग्न में बृहस्पति, धन भाव में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हों तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है।।14।।

सप्तमे भवने चंद्रो रवी राहुश्च मङ्गलः।

सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः॥15॥

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चंद्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हों तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है।।15।।

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।

तीव्रपीडा भवेत्तस्यं स्वस्थानेनैव तिष्ठति॥16॥

जन्मकाल में उच्च राशि का मंगल सूर्य और राहु के साथ हो तो शरीर में बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है।।16।।

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।

सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति॥17॥

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6/8/12) में हो और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है।।17।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।

यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे॥18॥

यदि बृहस्पति, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक को दीर्घायु और पद-पद में धन संपत्ति देने वाला होता है।।18।।

कुंभलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, खर्चेश	–	शनि
2.	धनेश, लाभेश	–	बृहस्पति
3.	पराक्रमेश, राज्येश	–	मंगल
4.	सुखेश, भाग्येश	–	शुक्र
5.	पंचमेश, अष्टमेश	–	बुध
6.	षष्ठेश	–	चंद्र
7.	सप्तमेश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-बुध, 9-शुक्र
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-चंद्र, 8-बुध, 12-शनि
10.	केन्द्राधिपति	–	1-शनि, 4-शुक्र, 7-सूर्य, 10-मंगल
11.	पणकर के स्वामी	–	2-बृहस्पति, 5, 8-बुध, 11-बृहस्पति
12.	आपोक्लिम	–	3-मंगल, 6-चंद्रमा, 9-शुक्र, 12-शनि
13.	त्रिकेश	–	6-चंद्रमा, 8-बुध, 12-शनि
14.	उपचय के स्वामी	–	3-मंगल, 6-चंद्र, 10-मंगल, 11-बृहस्पति
15.	शुभ योग	–	1. शुक्र, 2. मंगल, 3. शुक्र+मंगल 4. बुध मध्यम फल
16.	अशुभ योग	–	1. बृहस्पति, 2. चंद्र, 3. मंगल, 4. सूर्य
17.	निष्फल योग	–	1. सूर्य+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र अकेला, 2. शुक्र+शनि सदोष 3. बुध+शुक्र सदोष, 4. सूर्य+शुक्र 5. बुध+शनि, 6. मंगल+शुक्र सदोष

19.	**राजयोगकारक**	–	शुक्र, योगकारक-बुध
20.	**मारकेश**	–	बृहस्पति, सूर्य, मंगल
21.	**पापफलद**	–	बृहस्पति, मंगल, परम पापी-चंद्र

विशेष–कुंभलग्न वालों के लिये मुख्य मारकेश बृहस्पति है, द्वितीय मारकेश सूर्य और पाप ग्रह मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार कुंभलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

जीवचन्द्रकुजा: पापा एको दैत्यबृहस्पति: शुभ:।
राजयोगकरो भौम: कविश्चैव बृहस्पति:।।57।।
निहन्ता ध्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिता:।
एवमेव फलान्युहमान्यतानि घटजन्मन:।।58।।

दूसरा पाठ

कुजजीवेन्द्रव: पापा एको दैत्यबृहस्पति: शुभ।
राजयोगकरौ भौमकवी एको बृहस्पति:।।59।।
निहन्ता ध्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन निश्चिता:।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि घटजन्मन:।।60।।

स्पष्टीकरण

बृहस्पति, चंद्र, मंगल पाप फल उत्पन्न करने वाले होते हैं। कारण बृहस्पति मारकेश और एकादशेश है। चंद्रमा षष्ठेश है और मंगल तृतीयेश है। शुक्र शुभ फल उत्पन्न करने वाला है कारण शुक्र (त्रिकोण) और केन्द्र का स्वामी नवमेश और चतुर्थेश है। मंगल और शुक्र इनका योग हो तो राजयोग होता है। बृहस्पति मारकेश और एकादशेश होने से वह अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद हो सकता है। इस प्रकार चंद्रमा और मंगल भी अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरे पाठ के अनुसार मंगल, बृहस्पति और चंद्रमा अशुभ फल देते है। शुक्र अकेला शुभ फल देता है। मंगल शुक्र योग राजयोग कारक होते हैं। बृहस्पति स्वयं मारक नहीं बनता मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक लक्षणों से युक्त हों तो वे मारक होते हैं। कुंभलग्न में जन्म हो तो इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

मकर और कुंभलग्नों में सब ग्रह योग शुभाशुभत्व की दृष्टि से समान है सिर्फ इन दोनों लग्नों के मारक ग्रहों में जो अन्तर है वह मकरलग्न के लिए मंगल होता है तो कुंभलग्न को बृहस्पति होता है। कुंभलग्न में शुक्र अकेला शुभ फल देता है। इसका कारण वह चतुर्थ (केन्द्र) और नवम (त्रिकोण) स्थानों का स्वामी होता है। मंगल शुक्र योग राजयोग होता है ऐसा कहने का हेतु मंगल तृतीयेश और दशमेश और शुक्र चतुर्थेश और नवमेश होता है। यही है। इस लग्न में रवि का विचार किया हुआ नहीं दिखाई देता परन्तु रवि बलवान् मारक सप्तम स्थान का स्वामी होता है। इसलिए अशुभ फल देगा। परन्तु मारक नहीं होगा। बृहस्पति, चंद्र आदि करके मारक बनते हैं। यहां पर बुध शुक्र का योग केन्द्र त्रिकोण अर्थात् चतुर्थेश और पंचमेश इनका होने से शुभ फल तो मिलेगा परन्तु यह योग सदोष है। उसी प्रकार बुध के संबंध में भी इस लग्न में कुछ भी उल्लेख नहीं है। बुध त्रिकोण का स्वामी होकर वह अष्टमेश भी है।

कुंभलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–शुक्र स्वयं शुभ ग्रह है। श्लोक 11 के अनुसार केन्द्राधिपतय दोष से यद्यपि दूषित है फिर भी वह नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और शुभ फल देने वाला है।
2. **शुभ योग**–मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है परन्तु श्लोक 7 के अनुसार दशम केन्द्र का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–नवम तथा दशम पति शुक्र और मंगल के साहचर्य योग के कारण से राजयोग हो सकता है और शुभ फल देने वाला होता है।
4. **शुभ योग**–बुध स्वयं शुभ ग्रह है और यहां पर पचंम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और अष्टम स्थान का स्वामी होने से अशुभ है। यहा पर इसके शुभ फल मिलेंगे।

कुंभलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–बृहस्पति नैसर्गिक शुभ ग्रह है परन्तु इस द्वितीय मारक स्थान का अधिपति होने से और एकादशेश होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।

2. **अशुभ योग**–चंद्रमा शुभ ग्रह है परन्तु षष्ठ स्थान का स्वामी होने से यहां पर अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।

3. **अशुभ योग**–मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है और तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है। यह दशम केन्द्र का स्वामी होने से शुभ माना गया है।

4. **अशुभ योग**–सूर्य स्वयं पाप ग्रह है और वह सप्तम (मारक) स्थान का स्वामी होने से अशुभ माना गया है। अशुभ फल देने वाला होता है।

कुंभलग्न के लिए निष्फल योग

1. सूर्य-बुध, दोनों ग्रह दूषित होते हैं।

कुंभलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र अकेला शुभ फलदायक है, 2. शुक्र-शनि (सदोष), 3. बुध-शुक्र (सदोष), 4. मंगल-शुक्र (सदोष), 5. सूर्य-शुक्र, 6. बुध-शनि।

कुंभलगन की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– कुंभ
2.	लग्न चिह्न	– घड़ा लिए हुए मनुष्य
3.	लग्न स्वामी	– शनि
4.	लग्न तत्त्व	– वायु तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	– स्थिर
6.	लग्न दिशा	– पश्चिम
7.	लग्न लिंग व गुण	– पुरुष, तमोगुणी
8.	लग्न जाति	– शूद्र
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
10.	लग्न का अंग	– पैर
11.	जीवन रत्न	– नीलम
12.	अनुकूल रंग	– नीला, आसमानी, काला
13.	शुभ दिवस	– शनिवार, शुक्रवार
14.	अनुकूल देवता	– शनिदेव
15.	व्रत, उपवास	– शनिवार
16.	अनुकूल अंक	– आठ
17.	अनुकूल तारीखें	– 8/17/26
18.	मित्र लग्न	– मीन, वृष व मकर
19.	शत्रु लग्न	– मिथुन व कन्या
20.	व्यक्तित्व	– अवधूत, योगी, साधक, तपस्वी, सत्यखोजी, अन्वेषक, यशस्वी।

21.	**सकारात्मक तथ्य**	–	संवेदनशील, समाज प्रिय, कुटुम्ब प्रेमी।
22.	**नकारात्मक तथ्य**	–	निरन्तर विचार बदलने की प्रवृत्ति।

❑❑❑

कुंभलग्न के स्वामी शनि का वैदिक स्वरूप

नवग्रहों के वैदिक मंत्रों एवं कर्मकाण्ड में शनि संबंधित जो मंत्र प्रयुक्त होता है। वह निम्न है–

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये

शंय्योरभि स्रवन्तु नः।

–ऋग्वेद10/9/4, यजुर्वेद 36/12

अर्थात् देदीप्यमान जल (जल रूप शनि देव) हमारे पान के लिए सुखरूप हों तथा रोगों का नाश करें। यहां शनि को जल स्वरूप कहा गया है। जल सूर्य से ही उत्पन्न हुआ अतः वह सूर्य पुत्र है। इसीलिए शनि को सम्भवतः सूर्य पुत्र कहा गया है। पञ्चविंशति ब्राह्मण 24/8/6 से शनिस्तु सौरः कहा गया है।

शम् का अर्थ पाप नाशक देवता के रूप में भी किया जाता है। 'शं' मतलब होता है कल्याणकारी, शान्ति प्रदान करने वाला ग्रह। 'शनि शमयते पापम्' शनि ग्रह हमारे पापों का शमन करता है। पापों का नाश करता है। इसलिए इसे शनि कहा गया है।

अर्थर्ववेद 19/9/7 में शनि ग्रह की प्रार्थना इस प्रकार है–

शं नो मित्र शं वरुणः शं विवस्वान् शमन्तकः।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शन्नो दिविचरा ग्रहाः॥

अर्थात् मित्र, वरुण, सूर्य, अन्तक (शनि), पृथिवी और अन्तरिक्ष में होने वाले उत्पात और आकाश में विचरण करने वाले ग्रह हमारे लिए शान्तिप्रद हों।

अथर्ववेद के इसी काण्ड के एक मंत्र में नव ग्रहों का उल्लेख इस प्रकार से गूढ़ात्मक भाषा में मिलता है। मंत्र है–

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

–(अथर्ववेद 19/9/10)

इसमें (चांद्रमसाः) चंद्रमा, बुध, आदित्य, अर्थात् सूर्य राहु, मृत्यु अर्थात् शनि, केतु, रुद्र से मंगल तथा तिग्मतेजसः से बृहस्पति ग्रह का अर्थ निकलता है।

शनि के अनेक नामों में से 'मृत्यु' यमाग्रज, शनैश्वर, मन्द, सौरि, छायासुत, तरणितनय, महिषा वाहन, खंज, सूर्य सुमन, असित, पंगु, दास, कृष्ण अश्वरोही, नीलकाय, क्रुर, कृशांग, कपिलाक्ष, कोण, रविपुत्र, नीलांजन, गिद्धवाहन, वगैरह हैं। अंग्रेजी में सैटर्न तथा उर्दू-फारसी में गृदुल या कोद्‍वान संस्कृत में असित, श्यामलांग, कालदृष्टि, शितिकण्ठ, शमीपुष्पप्रियः नीलश्छाया, रविनन्दनः कहा गया है।

❑❑❑

कुंभलग्न के स्वामी शनि का पौराणिक स्वरूप

शनैश्चर की शारीरिक-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्ण मुकुट गले में माला और शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीध पर सवार रहते हैं तथा हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (सुवर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्म पुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है–बचपन से शनि देवता भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुंची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसीलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान टूटने पर शनि ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि उनके द्वारा किसी को अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी-शंकट भेदन कर दे तो पृथ्वी को बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ता है और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाता है। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाता है, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़प कर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपने रथ पर

सवार होकर नक्षत्रमण्डल में पहुंचे। पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भांति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारस्त्र का संधान किया। शनि देवता महाराज की कर्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने के लिए कहा। शनि देव की कृपा देखकर महाराज को रोमान्च आ गया। उन्होंने रथ में धनुष डाल दिया और उनकी पूजा की। उसके बाद सरस्वती तथा गणेश का ध्यान कर स्रोत की रचना की। इस स्तुति से शनि देवता संतुष्ट हो गये तथा बाद में महाराज दशरथ ने वर मांगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट-भेदन न करें। व भगवन् देवता, मानव, पशु-पक्षी, किसी को आप कष्ट न दें। शनि देवता ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया शर्त यह थी कि यदि किसी की कुण्डली या गोचर में मृत्यु स्थान, जन्म स्थान अथवा चतुर्थ स्थान में मैं रहूं, तब मैं उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हूं किंतु यदि वह मेरी प्रतिमा की पूजा करेगा या तुम्हारे द्वारा किये गये स्त्रोत पाठ का पाठन करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा।

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुंभ राशि का स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 11 वर्ष की है। इनकी शांति के लिए मृत्युजंय जप, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली, गौ, जूता, कस्तूरी और स्वर्ण का दान देना चाहिए।

इसके जप के लिए वैदिक मंत्र–

'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शय्योरभि स्रवन्तु नः॥

पौराणिक मंत्र–

नीलाअन्चनसमाभांस रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥

बीज मंत्र–

'ओ३ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नम॥:'

सामान्य मंत्र–

'ओ३म् शं शनैश्चराय नमः॥'

इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संख्या 23000 होनी चाहिए।

उत्पत्ति–सभी पुराणों में शनि की उत्पत्ति छाया के गर्भ से व सूर्य के पुत्र के रूप में प्रदर्शित की गई है। आदि देव त्रयी (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) में भगवान शंकर ने सृष्टि के नियमन व उसे अनुशासित करने हेतु गणों का जब प्रादुर्भाव किया तब भगवान भास्कर की एक पत्नी छाया के गर्भ से 9 पुत्रों ने जन्म लिया। उसमें शनि व यम ये भयोग्तपादक दैवी शक्तियों के रूप में प्रकट हुये। शनि बड़े पुत्र हैं यम इनके अनुज हैं। सृष्टि को दण्डित करने का काम शनि और संहार का काम यम ने लिया। दोनों ही शिव की सेवा में दत्तचित्त होने से शिवोपासना से नियंत्रित रहते हैं। ये दोनों कार्य शिवशक्ति से ही इन्हें प्राप्त हैं।

गाथाएं–शनि के बारे में अनेक गाथाएं व किंवदन्तियां प्रचलित हैं। 1. शनि एवं हरिशचन्द्र 2. शनि एवं दशरथ, 3. शनि एवं विक्रमादित्य, 4. शनि एवं नल, 5. शनि एवं पिप्लाद मुनि, 6. शनि एवं श्री हनुमान 7. शनि एवं पाण्डेय, 8. शनि व शंकर का युद्ध। अलग-अलग पुराणों में भी अन्य भिन्न-भिन्न गाथाएं दृष्टिगोचर होती हैं।

पुराणों की कथाओं से मन्तव्य–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शारीरिक, कष्ट, अर्थहीनता, मानहानि, काम में रुकावटें, पलायन, निष्कासन, कभी कारावास, दरिद्रता, विनम्र शत्रुभय रोग आदि दु:खद स्थितियां आती हैं, यह ध्रुव सत्य है। इनका निवारणकर्ता भी है और इसके कारण में शनि का हाथ किसी न किसी रूप में रहता है। इसकी प्रसन्नता व शुभ ग्रह संबंध से वैभव, ऐश्वर्य और धन धान्य से भी समृद्धि आती है। अत: इन कथाओं का ज्यादातर मन्तव्य है जगत् में अचानक आई आपत्तियों का निराकरण और जीवन को सुव्यवस्थित करना है।

जगत् में मानव के जीवन में सच्चे और झूठे का भेद समझाने की शक्ति यह शनि का विशेष गुण है क्योंकि विपत्ति, कष्ट और निर्धनता ये सबसे बड़े गुरु व शिक्षक है। जब तक शनि की सीमा से प्राणी बाहर नहीं होता संसार में उन्नति संभव नहीं है।

शनि दृष्टि–पुराणों में इसकी दृष्टि भयावह है। ऐसे वर्णन मिलते हैं। इसकी दृष्टि अपने घर से तीसरे, सातवें और दसवें स्थान पर पूर्ण मानी गई है। वैसे एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद, दृष्टियां भी पूर्णतया काम करती हैं। शनि जी की गाथाओं में आता है, ''मेरी दृष्टि बुरी है, राजा को पूजा का करूं अकाजा''।

आचार्य वरा मिहिर ने तो शनैश्चराध्याय लिखा है। उसमें शनि की विषमयी दृष्टि का वर्णन है। 1. पिता सूर्य पर दृष्टि पर पड़ी तो कुष्ठ रोग हो गया। 2. माता पार्वती के पुत्र पर पड़ी तो पुत्र का मस्तक कट गया जिससे गज मुख का जन्म हुआ। 3. सूर्य के सारथी पर पड़ी तो वह पंगु हो गया तथा उसके घोडे अंधे हो गये। ऐसी अनेक कथाएं दृष्टि के संबंध में विख्यात हैं। इसका कारण ''ब्रह्म वैवर्तपुराण'' में

इनकी पत्नी का श्राप है। तब से शनि प्राय: अद्योदृष्टि से व्यवहार करते है। शनि को पुराणों में विष्णु भक्त बताया गया है। अत: इनकी शक्ति से कृपा दृष्टि लोगों को मालामाल कर देती है। शनि को धनप्रदाता माना गया है। यह आनंद व सुख सर्जक दृष्टि भी शुभ संबंध से देते हैं।

शनि में त्यागमयी प्रवृत्ति होने से त्यागी, वैरागी व आध्यात्मिक लोग शनि प्रभाव से पूर्ण पाये जाते हैं। अत: यह केवल दु:ख ही नहीं सुख का सर्जक भी है। शनि जहां बैठता है वहां सुख करता है और जहां देखता है बिगाड़ करता है। यह एकान्त प्रिय है तथा सदा उदासीन रहता है।

शनि पनौती—राशि चक्र में यह सबसे दूर का ग्रह है। इसकी 1 राशि में परिक्रमा 29 वर्ष 5 मास 27 दिन 5 घटी में पूर्ण होती है। इसकी मध्यम गति 2 कला, 1 विकला, दैनिक गति 3 से 6 कला तक होती है। दक्षिण ओर 2 अंश 49 कला रहता है। यह 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय 5 दिन सम्मित रहता है। यह बहुत चमकीला तथा प्रकाशमान नहीं है। इसकी गति मंद है। ढाई वर्ष की इसकी पनोती है। यह 30 मास में एक राशि बदलता है।

शनि का रंग—मत्स्य पुराण में कृष्णवर्णी शनि को नीलात्जनसम का वर्णन किया गया है। मनोविज्ञान के आधार पर नीला रंग बल, पौरुप और वीर भाव का प्रतीक है। हमारे सिर पर विस्तृत आकाश नील वर्ण है। अत: शनि नीले रंग का होता है। नीला रंग सहिष्णुता का प्रतीक है। यह सर्वव्यापक रंग होने से नीले रंग वाले पौरुष के प्रतीक होते हैं। यह नाटा भी है और कहीं इसका लम्बा कद भी मिलता है। अत: नीलकण्ठ शिव शनि के आराध्य देव हैं। शिव भक्ति से शनि प्रसन्न होते हैं।

शनि का बलवत्ता—इसके मित्र ग्रह बुध, राहु, शुक्र हैं। समग्रह बृहस्पति है। शत्रु सूर्य, चंद्र, मंगल है। दशम में शनि कारक है। षष्ठ व आठवें द्वादश का कारक हैं। तुला, मकर व कुंभ राशि में, स्त्रियों के स्थान में, विषुवत् के दक्षिण अयन में द्रेषाण में स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दिशा में, दिन के अंत में राशि के अंत भाग में, युद्ध समय में कृष्णपक्ष में वक्री होने के समय किसी भी स्थान में शनि बलवान होता है। यह मंगल से दूषित होता है। शिशिर ऋतु इसको प्रिय है। शनि मूल त्रिकोण में कुंभ राशि का तुला के 20 अंश तक उच्च होता है। शनि का मंष में नीच का स्वगृह मकर और कुंभ है। वृषभ एवं तुला लग्नों में यह प्रधान ग्रह है।

इसका वास पश्चिम दिशा में है। 12वें भाव में शनि हर्षबली और 7वें में दिग्बली होता है।

रोगों का कारक तत्त्व—दांत, दाहिना कान, चौथे दिन का बुखार, शीत ज्वर, कोढ़ रक्तपित्त क्षय, दाद-फोड़े, कामला, अध्रगवायु, कम्प, निरर्थक भय, पागलपन,

जलोद, घुटनों के रोग, सन्धिवात, अतिरक्तस्राव, हड्डी टूटना, लकवा, स्नायु दौर्बल्य, गुप्तेन्द्रिय रोग, व्यसन, गूंगापन, पसीने की दुर्गंध के रोग, हाथी पांव इत्यादि होते हैं।

अन्य कारक तत्व—बैंक, ब्याज, धीरण-धारण का धंधा, मला, कारखानें, मशीनरी के कार्य, आध्यात्म चिंतन, भूगर्भ, मिल मालिक, भागीदारी, प्रेस, कोयला, कंपनियां, कालेधन, खदानें, बीमा, लोहे की चीजें, तेल के व्यापारी, वैरागी, कृषि, विद्यालय, पुरात्व, स्नायुशास्त्र, न्यायालय, नगरनिगम, विधानसभा, जमींदार, स्मगलर, छोटे भाई बहिन, जेल, विदेश, मंत्री, इंजैक्शन, नीच वर्ग, हड्डियों के डॉक्टर, झूठ बोलना, भ्रमण, पतन, तामसवृति, बुरे धंधे आदि।

शनि का स्वरूप—पंचांगों में शनि की दोनों राशियों के दो स्वरूप हैं। मकर में मगरमच्छ और कुंभ में घड़ा हाथ में लिये पुरुष बताया गया है। अतः मगरमच्छ दुःख का प्रतीक है तो पुरुष अमृत तथा धन पौरुष का प्रतीक है।

मकर में कद मध्यम, लम्बा या नाटा होगा। शनि बलवान हो तो लम्बा कद होता है। रंग गेहुंआ या कालाश लिये हुए। नाक और मुंह कुछ बड़े व चौड़े। दांत चौड़े, सुन्दर नेत्र, आंखों की भौंहों पर बड़े-बड़े बाल, सीने पर भी बड़े-बड़े बाल, सिर बड़ा तथा सीना चौड़ा होता है। बड़े होने पर कुछ झुक कर चलें। कमर से पैर तक का भाग पतला होगा।

कुंभ में प्रायः लम्बा कद, रंग गेहुंआ, होंठ मोटे, गाल फूले हुए, कूल्हों व नितम्ब का हिस्सा भारी होता है। मोटी गरदन, सिर में गंजापन भी जल्द आता है। घड़े के आकार का शरीर होता है।

ये लोग भौतिक उन्नति में विश्वास अधिक करते हैं तथा इनके पास गुप्त शक्ति होती है। गैर समझ खड़ी कर देते हैं। छिपकर पाप करते हैं। धन के लोभी होते हैं पर परिश्रमी अधिक होते हैं। प्रबल महत्वाकांक्षी होते हैं। उत्साही व जिम्मेदार होते हैं। इनकी मानसिक व आत्मिक शक्ति तीव्र होती है। मनोरंजन तथा सुगंधित पदार्थों के शौकीन होते हैं। कठिनाइयों का सामना करने, श्रम व सेवा का ठोस भाव इनमें पाया जाता है। दूसरों को चोट पहुंचाने में यह दक्ष होते हैं। विचारशील होते हैं पर जब तक कोई छेडे नहीं शांत रहते हैं। धर्म भीरू होते हैं। नवीन आविष्कार करने वाले होते हैं।

वायु तत्त्व प्रधान होते हैं बाहरी आवरण से धार्मिक पर पुण्य कर्म व ईश्वर के प्रति निष्ठा भी होती है। घूमने के शौकीन, भोजन के बाद शीघ्र आराम के इच्छुक, उच्चाभिलाषी होते हैं अपना पक्ष कमजोर देखें तो नम्र भी हो जाते हैं। लज्जाहीन होते हैं। इनके स्वभाव में ओछापन पाया जाता है। नीच वर्ग से प्रीतिवान होते हैं। इनको

स्मरण शक्ति प्रबल होती है। कोई इनका नुकसान करे तो बदला लेने में नहीं चूकते हैं। मन से डरपोक बाहर से अभिमानी होते हैं। दूसरों को ठगने में इनकी रुचि होती है। यह अपना काम निकालने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। खरी-खोटी कहने में हिचकते नहीं हैं। भावुक भी होते हैं। आवश्यकता हो तो ही काम करते हैं। धन की व्यवस्था में प्राय: असफल रहते हैं, पर बाहरी चमक-दमक में विश्वास नहीं रखते हैं। किसी भी काम को परिश्रम से पूरा करना इनकी विशेषता होती है पर विश्वास पात्र कम बनते हैं। इनकी आकस्मिक रूप से उन्नति और अवनति होती रहती है। प्राय: इनकों संतान पक्ष की चिंता सताती रहती है। स्त्रियों से व्यवहार भी मुसाफिरी जैसा रहता है। पर अधीनस्थ लोगों से काम कराने में चतुर होते हैं। यह हर काम में सावधानी बरततें हैं। सभी इनकी प्रशंसा करें इसके ये इच्छुक होते हैं। प्रशंसक से काम भी निकाल लेते हैं।

शनि के अचूक फल

1. शनि की दृष्टि अपने घर के सिवाय सर्वत्र हानि करती है।
2. छठे और आठवें तथा बारहवें भाव का कारक शनि इन भावों में हो तो लाभ करेगा।
3. आठवें भाव में शनि नीच का हो तो धनपति बनायेगा। शनि नीच का होकर वक्री हो तो करोड़ों का स्वामी बनायेगा।
4. शनि, मीन, मकर, तुला व कुंभ राशि में लग्नस्थ हो तो व्यक्ति चिंतनशील, सुखी एवं ख्याति प्राप्त होता है। पर भाग्योदय मंद गति से होता है।
5. वृषलग्न में शनि नवम या दशम भाव में हो तो राजयोग बनेगा। ऐसा शनि सूर्य व बुध षष्ठ संबंध में से कोई संबंध कर ले तो अति योगप्रद होगा। अगर संयोग की जन्म राशि भी मकर या कुंभ हो तो उसको जब ढैया पनौती आयेगी तो वह लाभप्रद होगी। यदि अनिष्ट का कुछ प्रभाव गोचर से बनता है तो वह अंत में होगा, क्योंकि राजयोग कारी गृह प्रारंभ प्रभाव प्रबल होता है।
6. वर्ष प्रवेश के लग्न वृष या तुला हों तो शनि शुभ फल देगा। यदि पनौती उसे चल रही हो तो भी नाम पात्र का कष्ट होगा।
7. शुक्र+शनि में अभिन्न मित्रता है। अत: वृष या तुलालग्न में शनि शुभ फल प्रदान करेगा।
8. वर्ष में वृषलग्न हो और जलराशि मकर हो तो धनु व मीन का शनि अनिष्टप्रद रहेगा। मकर व कुम्भ का शनि शुभप्रद रहेगा।

9. जन्म या वर्ष में वृषलग्न हो और **शनि+गुरु** योग बनता हो या शनि की बृहस्पति से प्रतियुति हो तो भाग्यनाशक योग होगा।
10. वृष या तुलालग्न हो और विंशोतरी शनि की महादशा चल रही हो साथ में पनौती भी आ जायें तो भी वह अधिक अनष्टिप्रद नहीं होगी।
11. शनि में शुक्र की महादशा या शुक्र में शनि की दशा हमेशा अनिष्टप्रद होगी।
12. नीचस्थ या वक्री गोचर का शनि जब जन्म राशिगत हो तो अनिष्टप्रद होगा।
13. शनि प्राय: राशि के अंत में फल देता है। सिंह लग्नस्थ शनि मंगल से दूषित हो तो जातक अपघात, आकस्मिक मृत्यु, कारावास या रिश्वत के आरोप में पकड़ा जाता है।
14. शनि+सूर्य का योग पितृ स्थान में होने से पिता से द्वेष व शत्रुता बढ़ता है।
15. चंद्र+शनि युति कर्क राशि में उत्साहहीनता व व्यसन देती है। चंद्र+शनि युति सिंह राशि में बड़ों से विवाद कराती है। चंद्र+शनि युति मेष राशि में होने से झगड़े करवाती है।
16. चंद्र+शनि युति अनिष्टप्रद है। इससे जीवन का उत्साह ओज, कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह यश रोकता है।
17. सूर्य से 5, 6, 8, 9 भाव में राशि पर शनि आएं तो अनिष्टकारी होगा।
18. जन्म में शनि स्थित राशि में या उससे छठवें आठवें स्थान या त्रिकोण में गोचर का बृहस्पति आए तो अनिष्ट करेगा।
19. जन्मकालिक सूर्य से सप्तम स्थान पर गोचर का शनि आए तो रोगग्रस्त करेगा।
20. जन्मकालीन बुध तथा चंद्रमा यदि गोचर का शनि अपनी दसवीं दृष्टि से देखे तो अनिष्ट अवश्य करेगा।
21. जन्म कालिक मंगल तथा शनि स्थित राशियों पर अथवा उससे सप्तम स्थान की राशि पर ग्रहण आए तो जीवन में संकट आते हैं।
22. अष्टमेश स्थित राशि पर गोचर का शनि विशेष अनिष्ट करता है।
23. जन्म की विंशोतरी दशा से चौथी दशा शनि की हो तो अनिष्टप्रद होती है।
24. मीन, तुला और धनु राशि का शनि लग्न में हो तो जातक समृद्धशाली होता है।
25. लग्न का शनि राशि 1, 2, 5, 10 का हो या 4, 8, 12 राशि का हो तो भाषण शक्ति में बाधा करेगा।
26. शनि चतुर्थेश होकर दशम भाव में बैठे तो मनुष्य छोटी स्थिति से उठकर महान् पदवी प्राप्त करेगा।
27. शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर बली हो तो दीर्घासुख देगा।

28. शनि की दृष्टि द्वितीय भाव, भावेश, पंचम भाव भावेश अथवा बुध पर हो तो अल्प विद्या या विघ्न युक्त विद्या प्राप्ति होगी।

29. एकादश भवन में स्थित शनि मनुष्य की मृत्यु सन्निपात व स्नायु रोगों से कराता है।

30. मकर अथवा कुंभलग्न का स्वामी शनि यदि कुण्डली में पीड़ित हो तो जंघाओं में कष्ट देगा।

31. सप्तमेश शनि हो और सप्तम भाव तथा शुक्र पर उसकी शुभ दृष्टि हो तो विवाह देरी से होता है।

32. पंचमेश शनि बलवान हो तो लड़कियों की भरमार रहती है।

33. शनि चंद्र पर अपनी दृष्टि का प्रभाव डाले तो जातक वैरागी होगा।

34. चतुर्थेश शनि बलवान हो तो जमीन जायदाद का सुख प्राप्त होगा।

35. नीच राशि में शनि प्राय: नौकरी करवाता है।

36. शनि+सूर्य युति पिता पुत्रों में मनोमालिन्य रखती है। अलग फल होते हैं, पर अष्टम भाव में दरिद्रता बनती है। यह युति पिता व पुत्रों में से एक को हानि देती है।

37. शनि+चंद्र युति योग माता-पुत्र में मनोमालिन्य देता है पर अलग-अलग भावों में अलग-अलग फल प्राप्त होता है फिर भी अष्टम भाव में जलोदर योग बनता है।

38. शनि+मंगल की युति भयंकर अवरोध योग है। अलग-अलग भावों में अलग पर पावें तो सम्पत्ति नष्ट होती है।

39. शनि+बुध युति योग इसमें व्यक्ति अन्वेषक होता है, पर निर्णय लेने में अस्थिरता रहती है। अष्टम स्थान दीर्घायुज बनती है।

40. **शनि+गुरु** युति योग इसके विचित्र परिणाम प्राप्त होते है। सुमश, सम्पत्ति व संतति में से एक का अभाव रहेगा। वंशश्रम की ज्यादा संभावना।

41. शनि+राहु युति योग महाविचित्र परिणाम आते हैं। आयु के 42वें वर्ष में भाग्योदय होता है। अकस्मात धन प्राप्ति व हानि होती है।

उपचार

1. महामृत्युंजय जप या शिव का जाप करें।
2. अमोघ शिवकवच का पाठ करें।

3. शनि संबंधी व्रत व कथा पढ़ें।
4. नीलम रत्न के साथ में पन्ना भी धारण करें। ये रत्न 5 वर्ष धारण करने के बाद प्रभावहीन हो जाते हैं।
5. मछलियों को आटे की गोलियां चुगाएं।
6. अपने खाने का अंतिम ग्रास बचाकर उसे कौवे को दे।
7. शनि संबंधी दान दें। यथा (उड़द, लोहा, तेल, चमड़ा, पत्थर, शराब, स्प्रिट)
8. नित्य कीडी नगरा सींचे।
9. हर शनि एवं मंगल को काले कुत्तों को मीठा दें।
10. काले कुत्ते को तेल में चुपड़ी रोटी मिष्टान रखकर हर शनिवार को खिलाएं।
11. दशरथकृत शनि स्रोत का पाठ करें।
12. नित्य सूर्योदय के समय सूर्य दर्शन करते समय यह श्लोक 7 बार पढ़ें।
    सूर्यप्रुभो दीर्घदेहो विशलादा शिनप्रिरा: मंदवार: प्रसन्नात्मा पीडा दहतु में शनि।
13. श्री वीर भगवान ताड़क का प्रयोग करें।
14. शनिवार को अपने हाथ के नाप का 19 हाथ काला धागा श्री माला बनाकर पहनें।
15. शनि पाताल क्रिया करें।
16. शनि को नक्षरों और काले कुत्ते को लड्डू खिलाएं।
17. प्रत्येक शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष तले सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक जलाकर शुद्ध दूध अर्पित करें।
18. व्रत का उद्यापन अवश्य करें, उसमें 33 ब्राह्मणों को भोजन कराना उत्तम होता है।
10. किसी शनिवार से आरम्भ करें 21 दिन में इस मंत्र का 23000 बार जाप करें या कराएं।

    ओ३म् प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नम:।

    अंत में शनि की वस्तुओं को दान में दें। हवन करें।
20. वीर विक्रमादित्य व शनि की कथा का रोज पाठ करें।

शनि का खगोलीय स्वरूप

बृहस्पति के बाद बड़े ग्रहों में शनि का स्थान है। नील वर्ण का यह ग्रह सूर्य से 1,42,60,00,00 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शनैःचर अर्थात् मन्द गति से चलने वाला यह ग्रह 29 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। शनि आकार में केवल बृहस्पति से ही छोटा है। इसका व्यास 1,20,500 कि.मी. है। इसका बृहस्पतित्व पृथ्वी के बृहस्पतित्व से 65 गुणा अधिक है। नौ चंद्रमा शनि ग्रह की परिक्रमा करते हैं, उनमें से छठा चंद्र मन्दी सबसे बड़ा होता है। शनि ग्रह अस्त होने के 3 दिन बाद उदय होता है। उदय के 135 दिन बाद यह मार्गी होता है। मार्गी के 105 दिन बाद यह पश्चिम में पुन: अस्त हो जाता है। शनि को काण, अर्कपुत्र, छायात्मज, असित, नील, मन्द, खंज आदि नाम दिये गये हैं।

शनि की गति–शनि ग्रह सूर्य का परिक्रमा 29 वर्ष 5 महीने 16 दिन, 23 घण्टा और 16 मिनट में करता है। यह अपनी धुरी पर 17 घण्टा 14 मिनट 24 सैकंड में एक चक्कर लगाता है। स्थूल मान से यह एक राशि पर 30 महीना, एक नक्षत्र पर 400 दिन और एक नक्षत्र पाद पर 100 दिन रहता है। यह प्रति वर्ष चार महीने वक्री और आठ महीने मार्गी रहता है। सूर्य से 15 डिग्री अंश की दूरी पर शनि ग्रह अस्त हो जाता है। अस्त होने के 38 दिन बाद उदय होता है। उदय के 135 दिन बाद मार्गी होता है और मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम दिशा में पुन: अस्त हो जाता है। यह प्राय: 140 दिन तक भी वक्री रह जाता है तथा वक्री होने के 5 दिन आगे या पीछे तक यह स्थिर रहता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से जब यह सूर्य से चौथी राशि को समाप्त करता है तो वक्री हो जाता है। जब वक्री से 120 डिग्री अंश चलता है तो मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 7/45 की होती है तब यह अतिचारी हो जाता है। सूर्य से दूसरी और बारहवीं राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समाचारी, चौथी पर मन्दचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अति वक्री तथा नवमी और दसवीं पर कुटिल गति वाला होता है।

❑❑❑

कुंभलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कुंभलग्न का स्वरूप

कुंभः कुंभी नरो बभ्रुवर्णो मध्यतनुर्द्विपात्।
द्युवीर्यो जलमध्यस्थो वातशीर्षोदयी तमः।।21।।
शूद्र पश्चिमदेशस्य: स्वामी दैवाकरिः स्मृतः।

–बृहत्पाराशरा होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 21

घड़ा लिये हुए पुरुष, भूरे वर्ण, मध्य देह, विपद, दिनबली, जलचारी, वायु तत्त्व, शीर्षोदय, तमोगुणी, शूद्र जाति, पश्चिमदिक् स्वामी है, इसका स्वामी शनि है।।21।।

करभगलः सिरालखररोमशदीर्घतनुः,
पृथुचरणोरुपृष्ठजघनास्य कटिर्जरठः।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः,
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृद् घटजोऽध्वसहः।।11।।

–बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 11

कुंभ में चंद्रमा रहने पर जातक लम्बी गर्दन वाला, दिखती नसों वाला, मोटे या कठोर रोमों वाला, लम्बे चौड़े शरीर वाला, बड़े पैर, बड़ी जांघों, चौड़ी कमर, बड़ा मुंह व मोटी कटि (बेल्ट बांधने की जगह) वाला, कठोर, दूसरे की स्त्री, दूसरे के धन को चाहने वाला पाप कार्यों में लगा रहने वाला, घटती बढ़ती अर्थात् अस्थिर या अनियमित आर्थिक स्थिति वाला, सजने-संवरने का शौकीन, मित्रों को प्यार करने वाला तथा रास्ते की थकावट को सहन कर लेने वाला अर्थात् पैदल यात्राएं करने में सक्षम होता है।

कुंभस्य लग्ने पुरुषोऽभिजातश्चलस्वभावः स्थिरसौहृदश्च:
प्रभूतधान्यार्थयुतः प्रचण्डो लुब्धोऽन्यनारीरतिलालश्च।।11।।

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.11/ पृ.289

यदि जन्म समय में कुंभलग्न का उदय हो रहा हो तो मनुष्य कुलीन, चंचल स्वभाव वाला, पक्की मित्रता करने वाला, खूब धन धान्य से परिपूर्ण, प्रचण्ड स्वभाव वाला, लोभी स्वभाव युक्त, अन्य स्त्री से रतिक्रिया की लालसा रखने वाला होता है।

अन्तःशठः परवधूरतिकेलिलोलः
कार्पण्यशीलधनवान् घटलग्नजातः।

–जातक पारिजात श्लो. 11/ पृ. 678

जिसके हृदय में शठता हो, दूसरों की स्त्रियों से रमण करने के लिये जिसका चित्त सदैव चंचल रहे, कृपण, धनी।

स्त्रीमानयशोभूतिः स्फीतप्रभवो घटस्याद्ये।
प्रांशुः कर्मसु निष्ठो धनवान्नृपसेवको जातः॥

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कुंभ राशि व कुंभ राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक स्त्री, सम्मान, यश, ऐश्वर्य पराक्रम से युक्त, उन्नत, कर्मठ, धनी और राजसेवक होता है।

कुंभलग्ने नरे जातोऽचलचित्तोऽति सौहृदः।
परदाररतो नित्यं मृदुकार्ये महासुखी॥

–मानसागरी अ. 1/ श्लो. 12

कुंभलग्न वाला जीव धरी गंभीर, स्थिर गतिशील, स्पष्टवादी, कामवासना से पूर्ण परिपूर्ण मनोवृत्ति वाला, भौतिकतावादी, सुखभोक्ता, मित्रप्रेमी, आडम्बरशील होता है।

भोजसंहिता

कुंभराशि का अधिपति शनि है। शनि पाप ग्रह है तथा उसका रंग काला होता है। कुंभ राशि वाला व्यक्ति प्रायः मध्यम कद का, गेहुएं वर्ण, गोल सिर, फूले हुए नथुने व गाल वाला, दीर्घकाय तोंद-युक्त, गंभीर वाणी बोलने वाला व्यक्ति होता है। यह राशि पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक व वायुतत्त्व प्रधान होती है। सो इस राशि वाले पुरुष का प्राकृतिक स्वभाव विचारशील, शान्त चित्त, धर्मभीरू तथा नवीन आविष्कारों का प्रजनन है।

कुंभ राशि का चिह्न जल से परिपूर्ण घट है। अतः इस राशि वाले पुरुष की आकृति घड़े के समान गोल व वाणी घट के समान गंभीर व गहरी होती है। ऐसे

व्यक्ति प्राय: बाहरी दिखावे में ज्यादा विश्वास रखते हैं। ये भीतर से खोखले व बाहरी दिखावे में सुंदर दिखलाई पड़ते हैं।

यदि आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में है तो आप भीतर ही भीतर कष्ट सहते हैं परन्तु बाहर उसकी आह तक नहीं निकालते। ये पूर्णत: रहस्यवादी व्यक्ति होते हैं। व्यापारी क्षेत्र में अपनी पूंजी का फैलाव सही पूंजी से कई गुना अधिक करते हैं। इनकी वास्तविकता को पहचान पाना बड़ा कठिन हो जाता है। ये बड़ा से बड़ा जोखिम लेने में नहीं हिचकिचाते।

सामान्यतया कुंभलग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं चंचल होते हैं परन्तु इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है जिससे अन्य जन इनसे प्रभावित रहते हैं। ये स्वभाव से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारधारा से युक्त होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही स्वीकार करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में स्नेह एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है तथा धार्मिकता की भावना में अल्पता रहती है एवं यह आधुनिकता से परिपुष्ट विचारों के होते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ-साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टिकोण विशाल होता है तथा इनके हृदय में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता है। अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक मान-प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करते हैं। अवसरानुकूल इनको नेतृत्व का भी अवसर प्राप्त हो जाता है। ये भावुकता से कोई भी काम नहीं करते तथा बुद्धिमत्तापूर्वक सोच समझकर अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं। अत: धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ्य एवं बलवान होंगे परन्तु मन में अस्थिरता का भाव होगा। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमत्ता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलत: आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि भी सूक्ष्म रहेगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप में पराक्रम में तेजस्विता का भाव भी रहेगा। फलत: अपने सांसारिक महत्त्व के कार्य कलापों को आप परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा उनमें सफलता प्राप्त करेंगे जिससे भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। लेकिन यदा-कदा उग्रता के प्रदर्शन से आपको अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

आर्थिक रुप से आपकी स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा आप आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भ्रमण या यात्रा के भी प्रिय होंगे तथा अवसरानुकूल भ्रमण तथा यात्रा आदि पर अपना काफी समय व्यतीत करेंगे। साथ ही व्यय भी आप मुक्त भाव से करेंगे लेकिन उत्तम आय होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य-कलापों एवं अनुष्ठानों को आप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। लेकिन यदा-कदा तीर्थ यात्रा को आप सम्पन्न कर सकते है। इस प्रकार आप पराक्रमी बुद्धिमान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

कुंभ राशि शीर्षोदय व तमोगुणी राशि है। इस राशि वाले गुस्सा कम करते हैं, और करते हैं तो फिर गांठ बांध लेते हैं। आप एकान्त प्रिय व्यक्ति हैं तथा कुछ स्वार्थी भावनाओं से परिपूर्ण हैं, अगर आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में हुआ है तो आप सर्वदा सरल स्वभाव वाले, उदार हृदय व स्नेहयुक्त व्यवहार से कीर्ति पाने वाले व्यक्ति हैं अगर आप व्यापार वर्गीय व्यक्ति हैं तो आपके हेतु निश्चित वाहन योग 36 वर्ष की अवस्था में बनता है।

कुंभलग्न दिवाबली व पश्चिम दिशा का स्वामी है। इस राशि से पेट के भीतरी भागों पर विचार किया जाता है। आपका स्वभाव मृदु व सरल एवं सद्‌गुणों से पूर्ण है परन्तु संकोचशीलता आपकी कमी है। आपको प्रतिपल एक वहम सा रहता है। आप ऐसा सोचते हैं कि अन्य व्यक्ति आपसे ईर्ष्या कर रहे हैं और आप अकारण अजनबी से उलझ पड़ते हैं। यदि आपमें यह आदत विद्यमान है तो यह कभी भी खतरनाक साबित हो सकती है। यदि आपको किसी प्रकार के गन्दे ख्वाब आते हैं तथा अकारण खिन्नता महसूस होती हो एवं बनते कार्यों में दिक्कतें व रुकावट आती हो तो फौरन शनि मुद्रिका धारण करें। शनि मुद्रिका घोड़े के पैर की घुड़नाल से बनाई जाती है। यह लोहे की होती है। शनि का रत्न नीलम भी आपके लिए अत्यधिक अनुकूल व लाभप्रद रहेगा।

नक्षत्रानुसार फलादेश

गू गे	गो सा सी सु	से सो द
धनिष्ठा-2	शतभिषा-4	पूर्वाभाद्रपद-3

चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में

दातार्थ शूरो धनवांस्त्वरोगी,
गीतप्रियो वासव भे प्रजातः।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और गीतप्रिय होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल होता है। मंगल चंद्रमा का मित्र है अत: मित्र के नक्षत्र में स्थित होकर चंद्रमा धनी और दाता और भोगी होगा ही। मंगल अपनी शूरवीरता भी देगा और भोगों की प्रवृत्ति भी। गीतप्रिय चंद्रमा के अपने स्वभाव के कारण होगा। सम्भवतया गायक न होगा।

धनिष्ठा का तृतीय पाद–धनिष्ठा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो व्यक्ति भीरु होता है। नक्षत्र पाद का स्वामी शुक्र होता है और नक्षत्र स्वामी मंगल। दोनों शक्तिशाली ग्रह हैं। अत: उनका प्रभाव भीरु नहीं बना सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि भीरु शब्द के पहले का 'अ' छूट गया है और तात्पर्य अभीरु से है।

धनिष्ठा का चतुर्थ पाद–धनिष्ठा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा हो तो जातक महानारीवरो अर्थात् महान स्त्री का पति होता है। नक्षत्र स्वामी भी यहां मंगल है और नक्षत्र पाद स्वामी भी। अत: चंद्र जो स्त्री रुप है, मंगल के गुणों को प्रभूत मात्रा में लेकर व्यक्त होगा जो नारी का महा बनायेंगे। महाशक्ति और प्रभाव ही के अर्थ में हो सकता है क्योंकि मंगल के अनुरुप ही महानता भी होती है।

चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र में

स्यात्स्पष्टवाक् साहसिकोऽबुपर्क्षे,
दुर्ग्राहय इन्दौ व्यसनी जितारि:।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र में हो तो जातक स्पष्ट वाणी वाला, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। जातक पारिजात ने भी इसी संदर्भ में मनुष्य का साहसी होना कहा है। व्यसनी आदि होना तो राहु के दानवी स्वभाव के कारण है, क्योंकि राहु इस नक्षत्र का स्वामी है। स्पष्टवाक् क्यों कहा, यह विचारणीय है। हमारे विचार में तो राहु के नक्षत्र में आकर चंद्रमा को इस वाणी संबंधित गुण में कमी प्राप्त करनी चाहिए थी, न कि वृद्धि।

यदि आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र में हुआ है तो आपकी ललित कलाओं में विशेष रुचि होगी। आपमें वक्तृव व श्रेष्ठ लेखन शक्ति भी विद्यमान होगी। पिता की आकस्मिक मृत्यु से धन प्राप्ति के आसार बनते हैं। आप भय रहित व निर्मल आत्मा वाले व्यक्ति हैं। हां! आप खाने के शौकीन हैं व प्राय: आपकी खुराक आम व्यक्ति से जरा ज्यादा होनी चाहिए। आपको वैवाहिक सुख जरा देरी से मिलते हैं।

शतभिषा का प्रथम पाद–शतभिषा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति अच्छा बोलने वाला (Orator) होता है। इस पाद का स्वामी बृहस्पति है जो कि वागीश नाम से प्रसिद्ध है और अच्छा वक्ता है चंद्रमा पर बृहस्पति के प्रभाव के कारण इसे 'वाग्मी' कहा गया है।

शतभिषा का द्वितीय पाद–शतभिषा के द्वितीय पाद में यदि जन्म समय में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति धनी होता है। यहां नक्षत्र राहु का है और नक्षत्र पाद का स्वामी शनि है। दोनों पानी भी हैं और चंद्रमा के शत्रु भी। ऐसी स्थिति में वे धनदायक कैसे हो सकते हैं? यह विचारणीय है।

शतभिषा का तृतीय पाद–शतभिषा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय पर में चंद्र स्थित हो तो मनुष्य सुखी होता है। नक्षत्र स्वामी राहु है और नक्षत्र पाद का स्वामी शनि। दोनों दु:खदायी हैं। अत: यह कैसे कहा जा सकता है कि व्यक्ति सुखी होगा। यह विषय विचारणीय है।

शतभिषा का चतुर्थ पाद–शतभिषा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति पुत्रयुक्त होता है। यहां नक्षत्र पाद स्वामी बृहस्पति बनता है, इसलिए पुत्र प्राप्ति की बात उपयुक्त है।

चंद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में

उद्विग्नचित्तो धनवांस्त्वरोगी,
अजाधिके स्त्रीवजितो अदाता।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित हो तो मनुष्य क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला और कंजूस होता है।

पूर्वा भाद्रपद बृहस्पति का नक्षत्र है। इसमें स्थित होकर चंद्रमा प्राय: शुभ प्रभाव के कारण हैं। स्त्री विजितो संभवतया इसलिए कि स्त्री ग्रह चंद्रमा शुभता को प्राप्त होकर स्त्री के गुणों का संचार करेगा जिसके फलस्वरुप स्त्री व्यक्ति का मन मोह लेगी। उद्विग्न चित्तो क्यों कहा, यह विचारणीय है, क्योंकि बृहस्पति का प्रभाव मन रूपी चंद्रमा पर पड़कर मन में शान्ति उत्पन्न करेगा, न कि उद्वेग।

अगर आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नामक नक्षत्र में हुआ है तो आपको हृदय रोग व रक्तचाप इत्यादि बीमारियों का भय रहेगा। परन्तु यदि आपका जन्म 14 फरवरी से 13 मार्च के बीच में हुआ है तो आपको उपरोक्त बीमारियों से भय कम रहेगा परन्तु शायद आप संतान पक्ष से चिंतित विशेष रहते दिखलाई पड़ेंगे।

पूर्वाभाद्रपद का प्रथम पाद–पूर्वाभाद्रपद के प्रथम पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति शूरवीर और चोर होता है। यह नक्षत्र पाद मंगल के आधिपत्य में आता है जो चोर भी और वीर भी।

पूर्वाभाद्रपद का द्वितीय पाद–पूर्वाभाद्रपद के द्वितीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो मनुष्य बुद्धि वाला होता है। यह नक्षत्र पाद शुक्र के आधिपत्य में है और नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। शुक्र और बृहस्पति दोनों बुद्धि में तीव्र हैं, दोनों आचार्य हैं। अत: महान बुद्धि का प्रभाव डालकर ये चंद्रमा को अपने अनुरूप बनाएंगे।

पूर्वाभाद्रपद का तृतीय पाद–पूर्वाभाद्रपद के तृतीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति पुर में रहने वाला होता है, ग्रामीण नहीं होता। कारण यही है कि नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति भी पौर ग्रह है और नक्षत्र का स्वामी बुध भी।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि

1. **अश्विनी** (केतु)				2. **भरणी** (शुक्र)				3. **कृतिका** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि

3. **कृत्तिका** (सूर्य)				4. **रोहिणी** (चंद्र)				5. **मृगशिरा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श.	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ड़	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	मं.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हू	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. **मघा** (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	चं.

11. **पूर्वाफाल्गुनी** (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	मं.

12. **उत्तरफाल्गुनी** (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

कन्या राशि

12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी.	5/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

13. **हस्त** (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. **चित्रा** (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पे	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (बृहस्पति)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. **मूल** (केतु)				18. **पूर्वाषाढ़ा** (शुक्र)				21. **उत्तराषाढ़ा** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. **उत्तराषाढ़ा** (सूर्य)				22. **श्रावण** (चंद्र)				23. **धनिष्ठा** (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. **धनिष्ठा** (मंगल)				24. **शतभिषा** (राहु)				26. **पूर्वाभाद्रपद** (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. **पूर्वाभाद्रपद** (बृहस्पति)				27. **उत्तराभाद्रपद** (शनि)				28. **रेवती** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ्	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू.	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ड,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भंग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

कुंभलग्न पर अंशात्मक फलादेश

कुंभलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–13/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गू
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है। फलत: यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा। शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा।

कुंभलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–13/3/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गू 11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है। फलतः यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा। शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। कुंभ राशि शनि 20 अंशों तक मूलत्रिकोणी होता है। अतः शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा 2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गू 11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में

होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है। फलत: यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा। शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **उदित अंशों** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों से कम होने पर लग्न बलवान होने से, लग्नेश शनि की दशा में जातक की उन्नति होगी।

कुंभलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–10/3/20/0 से 10/6/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सिंह
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वसु
10. वर्णाक्षर–गे
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व.
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलत: मंगल की दशा राजयोग प्रदाता होगी तथा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से **उदित अंशों** में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है। अत: शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–10/3/20/0 से 10/6/40/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलत मंगल की दशा राजयोग प्रदाता होगी। जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0 से 10/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धन शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतु चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलत: मंगल की द राजयोग प्रदाता होगी जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होग

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अं में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक श मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फल लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0 से 10/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स
18. **प्रधान विशेषता**–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धर्न शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतु चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलत: मंगल की दश राजयोग प्रदाता होगी तथा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंश में होने से लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी

कुंभलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–गो
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है। शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है। बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है। बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलतः बृहस्पति की दशा यहां अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी। बृहस्पति में राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतंत्र दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से **उदित अंशों** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां शनि की दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति करायेगी।

कुंभलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण

10. **वर्णाक्षर**–गो
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है। शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है। बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है। बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलतः बृहस्पति की दशा यहां अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी। बृहस्पति में राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतंत्र दशा उत्तम फल देगी।

लग्न यहां आठ से नौ अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–गो
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं

पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है। शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है। बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है। बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलतः बृहस्पति की दशा यहां अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी। बृहस्पति में राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतंत्र दशा उत्तम फल देगी।

लग्न यहां नौ से दस अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ता
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतंत्र दशा भी अत्यन्त शुभफल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि में राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है। पूर्ण बली है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि

मूलत्रिकोणी कहलाता है। अत: शनि की दशा में जातक की उन्नति होगी। उसका सम्पूर्ण विकास होगा।

कुंभलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–अश्व **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–वरुण

10. वर्णाक्षर–ता **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अत: शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतंत्र दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि में राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ता
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अत: शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतंत्र दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि में राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–10/13/20/0 से 10/16/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ती
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र के देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला, तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी। राहु की स्वतंत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है। पूर्ण बली है। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

कुंभलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–10/13/20/0 से 10/16/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ती
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी। राहु की स्वतंत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि

मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–10/13/20/0 से 10/16/14/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ती
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलत: शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी। राहु की स्वतंत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी।

लग्न यहां पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–10/16/14/0 से 10/20/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद

6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है। शनि की दशा जातक को उन्नति देगी, आगे बढ़ायेगी।

कुंभलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/16/14/0 से 10/20/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहां सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–10/16/40/0 से 10/20/0/0

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–अश्व | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–वरुण

10. वर्णाक्षर–तू | **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहां अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों

तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–10/16/40/0 से 10/20/0/0

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–अश्व | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–वरुण

10. वर्णाक्षर–तू | **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलतः बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहां उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–10/20/0/0 से 10/23/20/0

4. वर्ण–शूद्र | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह | **7. गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–से

11. **वर्ग**–मीढा

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'शूरश्चोरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा जो वस्तु विनम्रता, प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने में रुचि रखेंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मंगल से मित्रता है। अत: मंगल की दशा शुभ फल एवं भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा में अपेक्षित शुभ फल नहीं मिल पायेंगे।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से **अवरोह अवस्था** में है। शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद

2. **नक्षत्र पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–10/20/0/0 से 10/23/20/0

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–सिंह

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–से

11. **वर्ग**–मीढा

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'शूरश्चोरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा

जो वस्तु विनम्रता-प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने में रुचि रखेंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मंगल से मित्रता है। अतः मंगल की दशा शुभ फल एवं भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा में अपेक्षित शुभ फल नहीं मिल पायेंगे।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से **अवरोह अवस्था** में है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/20/0/0 से ..20/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–से
11. **वर्ग**–मीढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'शूरश्चोरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा जो वस्तु विनम्रता, प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने में रुचि रखेंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मंगल से मित्रता है। अतः मंगल की दशा शुभ फल एवं भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा में अपेक्षित शुभ फल नहीं मिल पायेंगे।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में **अवरोह अवस्था** में है। बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–10/20/0/0 से 10/23/20/0

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–सो
11. **वर्ग**–मींढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है। फलतः शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा में पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में **अवरोह अवस्था** में है। बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–10/23/20/0 से 10/26/40/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–सो
11. **वर्ग**–मींढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है। फलत: शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा में पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य **अवरोह अवस्था** में है। बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–10/23/20/0 से 16/26/40/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–सो
11. **वर्ग**–मीढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद स्वामी एवं बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है। फलत: शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा में पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–10/26/40/0 से 10/30/0/0

4. वर्ण–शूद्र **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. वर्णाक्षर–द **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–10/26/40/0 से 10/30/0/0

4. वर्ण–शूद्र **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. वर्णाक्षर–दा **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद स्वामी एवं बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–10/26/40/0 से 10/30/0/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–दा
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न अट्ठाईस से उन्नतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर **'हीनबली'** है। सारा तेज समाप्ति की ओर है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–10/26/40/0 से 10/30/0/0

4. वर्ण–शूद्र **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. वर्णाक्षर–दा **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलतः बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न उन्नतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

❑❑❑

कुंभलग्न और आयुष्य योग

1. कुंभलग्न वालों के लिये बृहस्पति लाभेश होने से मारकेश का कार्य नहीं करेगा। मंगल मारकेश का भूमिका करेगा। सूर्य सप्तमेश होने से सहायक मारकेश है क्योंकि यह लग्नेश का शत्रु ग्रह है। षष्टेश चंद्रमा इस लग्न के लिए पाप फलदायक है। आयुष्य प्रदाता ग्रह शनि है।
2. कुंभलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु किसी स्त्री से, विलासिता के कारण, अपनी सम्पत्ति के कारण, हृदय, गठिया के वायु विकार के कारण, अपने पर ही आश्रित व्यक्ति व नौकर के कारण होती है।
3. कुंभलग्न में जन्म लेने वाले की औसत आयु 61 वर्ष मानी गई है तथा इन्हें आयु के 1, 6, 18, 26, 32, 39, 44, 49, 52, 55 और 61वें वर्ष में शारीरिक कष्ट या मृत्यु होती है।
4. कुंभलग्न में बुध गोपुरांश में होकर पंचम स्थान में बैठा हो तो जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
5. कुंभलग्न में शनि केन्द्र स्थानों (1/4/7/10) में हो, शुक्र एवं चंद्रमा चौथे या नवम स्थान में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
6. कुंभलग्न में शनि हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र में हो, सभी पाप ग्रह तीसरे, छठे, या ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
7. कुंभलग्न में बृहस्पति मीन का, शुक्र मकर का बारहवें तथा सूर्य कुंभ का लग्न स्थान में हो तो ऐसा जातक जड़ी-बूटी, औषधि व योग के सहारे 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
8. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में बैठा हुआ बृहस्पति एवं शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
9. कुंभलग्न में चंद्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुंभ राशि में हो अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों में हों तो जातक नब्बे वर्ष की उत्तम आयु को प्राप्त करता है।

10. कुंभलग्न में चंद्रमा छठे कर्क का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
11. कुंभलग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु भोगता है।
12. कुंभलग्न में मंगल पांचवे मिथुन का, शनि मेष का एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।
13. कुंभलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा पंचम या द्वादश भाव में हो, बृहस्पति बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष होती है।
14. कुंभलग्न में बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ लग्न में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
15. शनि लग्न में, वृष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं दशम भाव में सूर्य अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
16. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध सातवें एवं चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. कुंभलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. कुंभलग्न में लग्नेश शनि पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
19. कुंभलग्न शनि+मंगल लग्न में हों, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
20. कुंभलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
21. कुंभलग्न में सूर्य+चंद्रमा कन्या राशि में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु नौ वर्ष की आयु तक हो जाती है।
22. कुंभलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसे बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

23. कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें एवं सूर्य बारहवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की तत्काल मृत्यु होती है।
24. कुंभलग्न के प्रथम या द्वादश भाव में सूर्य+शनि+मंगल+राहु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।
25. कुंभलग्न में छठे भाव में स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
26. कुंभलग्न में तृतीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
27. कुंभलग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।
28. कुंभलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
29. कुंभलग्न में षष्ठेश चंद्रमा सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।
30. कुंभलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

कुंभलग्न और रोग

1. कुंभलग्न में षष्टेश चंद्रमा लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. कुंभलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो, चतुर्थेश शुक्र पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. कुंभलग्न में चतुर्थेश शुक्र यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जात॰. हृदय रोग होता है।
4. कुंभलग्न में चतुर्थेश शुक्र कन्या राशि में निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कुंभलग्न में चतुर्थ स्थान में शनि, षष्टेश बुध एवं सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. जातक पारिजात के अनुसार कुंभलग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. कुंभलग्न के चतुर्थ स्थान में वृष का शनि एवं लग्न में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. कुंभलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को तीव्र हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. कुंभलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. कुंभलग्न में शनि+शुक्र+बुध की युति एक साथ, दु:स्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।
11. कुंभलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. कुंभलग्न में क्षीण लग्नस्थ हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में एवं लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. कुंभलग्न में मंगल पांचवे मिथुन का, शनि मेष का एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

15. कुंभलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा पंचम या द्वादश भाव में हो, बृहस्पति बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष होती है।

16. कुंभलग्न में बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ लग्न में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. शनि लग्न में, वृष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं दशम भाव में सूर्य अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध सातवें एवं चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. कुंभलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. कुंभलग्न में लग्नेश शनि पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

21. कुंभलग्न शनि+मंगल लग्न में हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

22. कुंभलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

23. कुंभलग्न में सूर्य+चंद्रमा कन्या राशि में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु नौ वर्ष की आयु तक हो जाती है।

24. कुंभलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसे बालक जन्म लेते ही **शीघ्र मृत्यु** को प्राप्त हो जाते हैं।

25. कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें एवं सूर्य बारहवें भाव में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की **'तत्काल मृत्यु'** होती है।

26. कुंभलग्न के प्रथम या द्वादश भाव में सूर्य+शनि+मंगल+राहु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

27. कुंभलग्न में छठे भाव में स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

28. कुंभलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

29. कुंभलग्न में शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर **'आत्महत्या'** करता है।

30. कुंभलग्न में चंद्रमा पा॰ .हों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत ॰.भिचार से पीड़ित रहता है।

31. कुंभलग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

32. कुंभलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कुंभलग्न और धन योग

कुंभलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धनप्रदाता ग्रह बृहस्पति है। धनेश बृहस्पति की शुभाशुभ स्थिति, धन स्थान से सम्बन्ध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग, बृहस्पति तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश बुध, भाग्येश शुक्र, लग्नेश शनि की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां भी कुंभलग्न में जन्मे जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैसे कुंभलग्न के लिए बृहस्पति, चंद्र, मंगल अशुभ हैं। शुक्र शुभ फलदायक है। बृहस्पति मारकेश होकर भी मारक नहीं है। घातक ग्रह का कार्य मंगल करेगा। सूर्य सप्तमेश एवं लग्नेश का शुभ होने से सह मारकेश का काम करेगा। षष्टेश चंद्रमा इस लग्न के लिये परम पापी है। अकेला शुक्र योगकारक है।

राजयोग कारक– मंगल+शुक्र,

शुभ व सफल योग– 1. शुक्र+शनि 2. बुध+शुक्र, 3. मंगल+शुक्र 4. सूर्य+शुक्र 5. बुध+शनि

निष्फल योग– 1. सूर्य+बुध

अशुभ योग– 1. शनि+गुरु 2. शनि+चंद्र, 3. शनि+मंगल, 4. शनि+सूर्य

लक्ष्मी योग–बृहस्पति द्वितीय या एकादश में, शुक्र केन्द्र-त्रिकोण में मंगल दशम भाव में।

विशेष योगायोग

1. कुंभलग्न में शुक्र, वृष, तुला या मीन का हो तो जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धन के मामले में पूर्ण भाग्यशाली होता है।

2. कुंभलग्न में बृहस्पति धनु, मीन या कर्क राशि में हो तो जातक भारी धनपति होता है तथा लक्ष्मी ऐसे जातक का पीछा नहीं छोड़ती।

3. कुंभलग्न में बृहस्पति शुक्र के घर में तथा शुक्र बृहस्पति के घर में परस्पर परिवर्तन योग बनाकर बैठे हों अर्थात् बृहस्पति वृष या तुला राशि में हो तथा शुक्र, धनु या मीन राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता तथा लक्ष्मी दासी के समान उसकी सेवा करती है।

4. कुंभलग्न में बृहस्पति यदि मंगल के घर में एवं मंगल बृहस्पति के घर में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो अर्थात् बृहस्पति मेष या वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल धनु या मीन राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी अनुचरी होती है।

5. कुंभलग्न हो पंचम भाव में बुध हो बृहस्पति धनु राशि का लाभ स्थान में चंद्रमा या मंगल के साथ हो तो " **लक्ष्मी योग**" बनता है। ऐसे जातक के पास अटूट लक्ष्मी होती है। अपने भुजबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ ऐसा व्यक्ति अखण्ड राज्यलक्ष्मी को भोगता है।

6. कुंभलग्न में मंगल यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा बृहस्पति स्वगृही हो तो जातक कीचड़ से कमल की तरह खिलता है अर्थात् धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय प्राय: 28 व 32 की आयु के मध्य होता है।

7. कुंभलग्न हो, पंचम भाव में बुध हो तथा लाभस्थान में अर्थात् धनु राशि में चंद्र, मंगल हो तो जातक महाधनी होता है।

8. कुंभलग्न हो, लग्न में शनि मंगल एवं बृहस्पति की युति हो तो "**महालक्ष्मी योग**" बनता है ऐसे जातक प्रबल पराक्रमी, अतिधनवान, ऐश्वर्यमान एवं महाप्रतापी होता है।

9. कुंभलग्न में शनि धनु राशि में तथा लाभेश बृहस्पति लग्न में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

10. कुंभलग्न हो, लग्नेश शनि, धनेश व लाभेश बृहस्पति, भाग्येश शुक्र अपनी-अपनी उच्च राशि या स्व राशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

11. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो "**धनहीन योग**" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया

नहीं ठहर पाता। उसे सदैव धन की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु जातक अभिमंत्रित ''बृहस्पति यन्त्र'' धारण करना चाहिए। पाठक चाहें तो 'बृहस्पति यंत्र' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

12. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति आठवे हो तथा सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो जातक को पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन मिलता है या लॉटरी से रुपया मिलता है पर रुपया उसके पास टिकता नहीं।

13. कुंभलग्न में मंगल यदि दशम भाव में वृश्चिक का हो तो **''रुचक योग''** बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

14. कुंभलग्न में सुखेश शुक्र, लाभेश बृहस्पति की युति नवम भाव में मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति अचानक धन की प्राप्ति होती है।

15. कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति मीन, वृष, मिथुन या तुला राशि में हो तो इस प्रकार के **'गजकेसरी योग'** के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

16. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति अष्टम में एवं अष्टमेश बुध धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुडरेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

17. कुंभलग्न में तृतीयेश मंगल लाभ स्थान में एवं लाभेश बृहस्पति तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदारों, कुटम्बीजनों एवं मित्रों के द्वारा धन लाभ होता है।

18. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति यदि चतुर्थेश शुक्र से युति करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति की माता, मातृपक्ष, वाहन व नौकरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

19. केन्द्र में बुध, सूर्य, राहु, शनि आदि हों तथा 2 ग्रह त्रिकोण स्थान में हों तो जातक परम भाग्यशाली, प्रभावी, धनवान, शक्ति सम्पन्न होता है।

20. दशम भाव में अर्थात् वृश्चिक राशि में चंद्र-शनि का योग हो तो वह जातक कुबेर तुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

21. कुंभलग्न हो, शनि लग्न में स्व का स्थित हो मंगल की 8वीं दृष्टि शनि पर हो तो **राजराजेश्वर योग** होने से जातक पूर्णरूपेण सम्पन्न, सुखी, धनवान, दीर्घायु होता है।

22. द्वितीय भाव में बृहस्पति तथा 11वें भाव में शुक्र हो तो जातक कंगाल के घर में जन्म लेकर भी लक्ष्याधिपति बनता है।
23. बृहस्पति नवम भाव में तथा शुक्र दशम भावस्थ हो, ऐसे शुक्र पर शनि की दृष्टि हो तो जातक लखपति बनता है।
24. यदि सूर्य और मंगल अष्टम भाव में अर्थात् कन्या राशि में हों तो दोनों ही दशाएं घोर कष्ट देती हैं। लक्ष्याधिपति व्यक्ति भी दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।
25. दशम भाव में शनि अकेला हो तो व्यक्ति निश्चित रुप से करोड़पति होता है।
26. बृहस्पति धन भाव अथवा धनेश केन्द्र, त्रिकोण या 11वें भाव में हो तो [illegible] क धनवान होता है।
27. बृहस्पति धनेश होकर कहीं भी मंगल के साथ हो तो वह जातक धनवान होता है।
28. दशमेश व धनेश केन्द्र भाव अथवा त्रिकोण 5, 9वें भाव में हो तो जातक को अनायास अर्थ लाभ होता है।
29. लग्नेश बृहस्पति अष्टम भाव में और अष्टमेश बुध लाभ स्थान में हो तो भूमि द्वारा धन लाभ होता है।
30. शुक्र, सप्तमेश सूर्य तथा भाग्येश एक साथ हो तो जातक का ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।
31. शनि, राहु अथवा केतु धन भावस्थ हो तो कभी धन की प्राप्ति हो जाती है कभी नहीं। धन को लेकर संघर्ष बना रहता है।
32. यदि तृतीयेश पंचमस्थ पंचमेश से युक्त हो तो जातक का भाई उच्च पद पर होता है अथवा स्वयं सत्ता प्राप्त व्यक्ति होता है अथवा ईश्वर कृपा से सम्पत्तिवान् होता है।
33. जन्म अथवा चंद्र से दशम भावस्थ बृहस्पति धनवान भ्राता से आर्थिक लाभ का द्योतक है।
34. कुंभलग्न में व्यय स्थान का स्वामी शनि बारहवें (व्ययस्थान में) ही हो तो व्यक्ति का धन पाप कार्य में खर्च होता है।
35. कुंभलग्न बृहस्पति बारहवें हो, लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो अकस्मात् धन हानि होती है।
36. कुंभलग्न में यदि बलवान बृहस्पति की पंचमेश बुध से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

37. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की षष्टेश चंद्रमा से युति हो, धनभाव मंगल या शनि से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

38. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की यदि सप्तमेश सूर्य से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

39. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की यदि नवमेश शुक्र से युति हो तो जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों, सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

40. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की दशमेश मंगल से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

41. कुंभलग्न में दशम भाव का स्वामी मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में जातक नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

42. कुंभलग्न में लग्नेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य छठे या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

43. कुंभलग्न के धन स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

44. कुंभलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

45. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति यदि अस्त हो, नीच राशि (मकर) में हो तथा धन स्थान में अष्टम भाव में कोई पाप ग्रह हो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

46. कुंभलग्न में लाभेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत तथा पापपीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

47. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध वक्री होकर कहीं बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है अर्थात्

ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अत: सावधान रहें।

48. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध शत्रुक्षेत्री, नीच का या अस्तगत हो तो व्यक्ति को अचानक धन की प्राप्ति होती है।

49. कुंभलग्न हो, धनेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती होकर धन भाव को देखता हो तथा लग्न स्थान में शनि+मंगल+चंद्र+सूर्य की युति हो तो जातक अरबपति होता है तथा विवाह के बाद इतना धन कमाता है, जिसकी वह स्वयं कल्पना नहीं कर सकता।

कुंभलग्न और विवाह योग

1. सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक की स्त्री साहसी, लड़ाकू एवं दृढ़ विचारों वाली होती है।
2. कुंभलग्न की कुण्डली में सप्तमेश सूर्य यदि पंचम भाव में अर्थात् मिथुन राशि में हो तो जातक पुत्र-रहित या स्त्री-रहित होता है।
3. शुक्र, सप्तमेश सूर्य और भाग्येश एक साथ हों तो जातक को ससुराल से धन प्राप्त होता है।
4. कुंभलग्न में शनि, चंद्रमा के साथ लग्न में हो, सप्तम में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है पर अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
5. कुंभलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय में सूर्य हो और पापग्रस्त हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. कुंभलग्न में शनि छठे, सूर्य अष्टम में पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
7. कुंभलग्न में सूर्य, शनि और शुक्र एक साथ कहीं भी बैठे हों तो जातक को दाम्पत्य सुख नहीं मिलता।
8. कुंभलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हों तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. कुंभलग्न में द्वितीयेश बृहस्पति वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चित रुप से जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

11. कुंभलग्न में सूर्य निर्बल हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो विवाह में अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

12. कुंभलग्न हो, लग्न में चंद्रमा व शुक्र स्थित हों, पाप ग्रह उन्हें देखते हों तो ऐसी स्त्री परपुरुष गामिनी होती है। उसके इस व्यभिचार कर्म में उसकी माता या मातृतुल्य अन्य वृद्धा स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

13. कुंभलग्न में चंद्रमा स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक कुंभ) में हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

14. कुंभलग्न के सप्तम भाव में मंगल हो, सप्तमेश सूर्य बुध व राहु के साथ पांचवें हो तो जातक के सर्वसमर्थ सुन्दर व भाग्यशाली होते हुए भी जातक का विवाह सही समय पर नहीं होता।

15. कुंभलग्न में शनि सातवें हो, सप्तमेश सूर्य आठवें हो तो जातक एक पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह करता है। भले ही शुभ ग्रह सप्तम भाव को देखते हो तो भी जातक को पहली पत्नी से धोखा मिलता है या तलाक होता है।

16. कुंभलग्न में शनि व मंगल लग्नस्थ हो, सप्तमेश सूर्य बारहवें हो, चतुर्थ या दशम में पाप ग्रह हो तो ऐसी स्त्री एक पति को त्याग कर दूसरा वरण करती है एवं स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है। वैवाहिक जीवन में उसे निराशा हाथ लगती है। ऐसी महिला पति पर हुक्म चलाती है तथा पति को हीन दृष्टि से देखती है।

17. कुंभलग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट शुक्र एवं चंद्रमा कहीं भी बैठे हों तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

18. कुंभलग्न में शनि एवं मंगल सप्तम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो ऐसी स्त्री उत्तम कुल में जन्म लेने पर भी पति को त्याग कर व्यभिचारिणी हो जाती है अथवा विधवा भी हो सकती है।

19. कुंभलग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/8/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान कठोर स्वभाव वाली, साहसिक प्रकृति की महिला होती है।

20. कुंभलग्न में यदि सूर्य, मंगल, बृहस्पति, चंद्र, बुध, शुक्र एवं शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थितिवश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

21. कुंभलग्न लग्न में लग्नस्थ चंद्रमा व शुक्र पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो ऐसी स्त्री माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।

22. कुंभलग्न में चंद्रमा और शुक्र लग्नस्थ हों तथा पंचम भाव पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो ऐसी नारी बन्ध्या होती है।

23. कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें उच्च के बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवन्ध्या होती है अर्थात् एक बार ही प्रसूता होती है।

24. कुंभलग्न में सप्तमेश सूर्य स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुंभ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

25. कुंभलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ अष्टमेश बुध हो तो "**द्विभार्या योग**" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

26. कुंभलग्न में सप्तमेश सूर्य यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण "**व्यभिचारी योग**" बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

27. कुंभलग्न में सूर्य यदि पाप ग्रह की राशि में हो, पाप ग्रस्त या पाप दृष्ट हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी कलहप्रिया एवं झगड़ालू होती है। जिससे जातक स्वयं दु:खी हो जाता है।

कुंभलग्न और संतान योग

1. कुंभलग्न में चंद्रमा तुला का नवम भाव में हो तो जातक के एक पुत्र होता।
2. कुंभलग्न में पंचमेश बुध यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
3. कुंभलग्न में पंचमेश बुध अस्त हो या पापग्रस्त, पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. कुंभलग्न में पंचमेश बुध लग्न (कुंभ राशि) में हो तथा बृहस्पति से युत किंवा दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. कुंभलग्न में पंचमेश बुध लग्न में हो एवं लग्नेश शनि पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
6. कुंभलग्न में बुध यदि पंचम भाव में हो तो जातक की तीन कन्याएं होती हैं। यदि साथ में सूर्य हो तो चार कन्याएं होती है।
7. कुंभलग्न में सूर्य हो, सूर्य पाप ग्रह से युत किंवा दृष्ट पाप पीड़ित हो तो ऐसे व्यक्ति की कुलदेवता के शाप के कारण संतान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।
9. कुंभलग्न में पंचमेश बुध कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. कुंभलग्न में लग्नेश शनि द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश बुध पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक की पुत्र संतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती हैं।

12. कुंभलग्न में पंचमेश शुक्र बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

13. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. कुंभलग्न में पंचमेश बुध की सप्तमेश सूर्य के साथ युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. लग्नेश शनि यदि 1/2/5/7/9/11 वें भाव में हो तो प्रथम पुत्र एवं 4/6/8/10/12वें भाव में हो तो प्रथम संतान कन्या होती है।

16. पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशिस्थ शनि हो तो संतान-सुख नहीं होता।

17. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पंचमेश बुध निर्बल हो, लग्नेश शनि भी निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

19. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक **"कालसर्प योग"** के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

21. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो **"वंशविच्छेद योग"** बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

22. कुंभलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो **"वंशविच्छेद योग"** बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

23. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को **"इलाख्य नामक"** सर्प योग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. कुंभलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "**अनपत्य योग**" बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

25. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो "**अनगर्भा योग**" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "**अनगर्भा योग**" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

28. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "**कुलवर्द्धन योग**" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

29. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

कुंभलग्न और राजयोग

1. यदि कुंभलग्न अपने पूर्णांश पर हो और शनि उसमें उच्चांश पर बैठा हो, बृहस्पति मीन का स्वगृही धन स्थान में बली हो, मंगल मेष का पराक्रम स्थान में हो और शुक्र वृष का स्वगृही चतुर्थ स्थान में हो तो राजयोग होता है। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. इसके अतिरिक्त यदि उच्च का शुक्र धन भाव में, उच्च का सूर्य पराक्रम स्थान में और उच्च का शनि भाग्य स्थान में तथा उच्च का शुक्र स्वगृही बृहस्पति के साथ धन स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का सूर्य स्वगृही मंगल के साथ पराक्रम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का चंद्रमा स्वगृही शुक्र के साथ चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. स्वगृही मिथुन का बुध पंचम स्थान में, स्वगृही सिंह का सूर्य सप्तम स्थान में, स्वगृही मंगल वृश्चिक का राज्य स्थान में और स्वगृही बृहस्पति धनु राशि का लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. चार, पांच, छः स्वगृही ग्रह या उच्च के ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में अथवा केन्द्र और त्रिकोण दोनों में बलवान हों, अस्त न हों तो राजयोग कारक होते हैं।
8. कुंभलग्न हो, शनि लग्न में स्व का स्थित हो, मंगल की 8वीं दृष्टि शनि पर हो तो '**राजराजेश्वर योग**' होने से जातक पूर्णरूपेण सम्पन्न, सुखी, धनवान दीर्घायु होता है।
9. शुक्र स्व राशिस्थ चतुर्थ भाव में बैठा हो तो वह जातक तीव्र मस्तिष्क वाला तथा उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होता है।

10. यदि तृतीयेश पंचमस्थ पंचमेश से युक्त हो तो जातक का भाई उच्च पद पर होता है अथवा स्वयं सत्ता प्राप्त व्यक्ति होता है अथवा ईश्वर कृपा से सम्पत्तिवान् होता है।
11. सिंह में बृहस्पति, कन्या में शुक्र, मिथुन में शनि, अपने घर का मंगल चौथे स्थान में हो तो जातक राजा होता है।
12. कुंभलग्न के दशम स्थान में बृहस्पति, बुध, शुक्र, चंद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।
13. कुंभलग्न में शनि, चंद्रमा हो और आठवें स्थान में शुक्र हो तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य मानी और सबका प्रिय राजा होता है।
14. कुंभलग्न में द्वितीय स्थान में शुक्र, दशम स्थान में बृहस्पति और छठें में राहु हो तो राजा पराक्रमी होता है।
15. कुंभलग्न में सूर्य तीसरे स्थान में, चौथे स्थान में शुक्र, बुध पांचवें स्थान या द्वितीय स्थान में हो और कोई ग्रह नीच में नहीं हो तथा दसवें, बारहवें घर में कोई ग्रह न हो जातक तीन समुद्र का राजा होता है।
16. कुंभलग्न में लग्न हो चतुर्थ स्थान में शुक्र और दशम स्थान में मंगल सूर्य-शनैश्चर के साथ हों तो वह निश्चित राजा होता है।
17. कुंभलग्न में पंचम नवम तृतीय घर में बृहस्पति चंद्रमा और सूर्य हो तो वह मनुष्य धन में कुबेर के समान होता है।
18. कुंभलग्न में त्रिकोण में बुध, बृहस्पति शुक्र हों और बुध, शनि क्रम से तीसरे, छठे हों और सप्तम में पूर्ण बली चंद्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला राजा के समान होता है।
19. कुंभलग्न में बृहस्पति शुक्र और चंद्रमा ये तीनों मीन राशि के हों तो इस योग जन्म में लेने वाले को राज्य प्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनेक पुत्र वाली होती है।
20. कुंभलग्न में राश्याधिपति नवम स्थान में हो और चंद्रमा लग्न में हो तो राजयोग होता है।
21. कुंभ का शुक्र, मेष का मंगल, कर्क का बृहस्पति हो तो कीर्तिमान राजयोग होता है।
22. कुंभलग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो, लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो राजयोग होता है।

❑❑

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
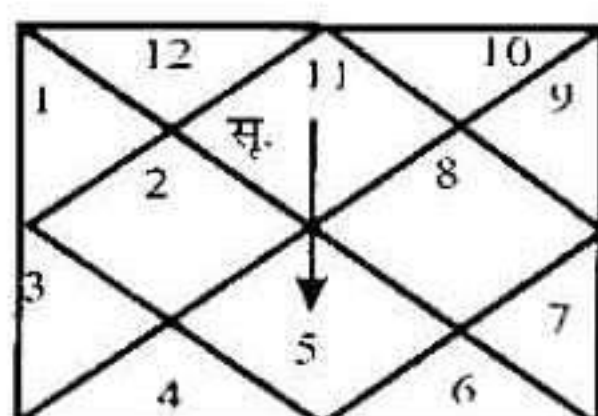
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां प्रथम स्थान में कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य पितृ कारक होकर पितृ स्थान से कोण में एवं अपने घर (सिंह राशि) से सातवें होने से सातवें व नवम भाव का फल ठीक देगा। ऐसा जातक तुनकमिजाजी होगा, पर उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसा जातक परदेश जायेगा तो उसे अच्छा मान-सम्मान मिलेगा व वह धन कमायेगा। भागीदारी के कार्यों में भी सफलता मिलेगी। पर संघर्ष के बिना कोई सफलता नहीं मिलेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव अपने ही घर (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी–जातक मध्यम कद, गोलाकार मुख एवं आकर्षक चेहरे वाला होगा। जातक की संतानें जातक से अलग व दूर रहेंगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति लग्न में होने से जातक का जीवनसाथी अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी एवं वफादार होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा। क्रोधी होगा एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। प्रथम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। ऐसा जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपने कुल-कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से ससुराल से धन मिलेगा, जातक की पत्नी धार्मिक व पतिव्रता होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से राज-सरकार से लाभ होगा। जातक बड़ा पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति लग्न में होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी परन्तु दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा बना रहेगा। जातक का सही उन्नति पिता की मृत्यु के बाद होगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को स्थापित होने में दिक्कतें डालेगा। जातक नास्तिक होगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु कीर्तिदायक है। जातक विदेशी लोगों से मित्रता बढ़ायेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
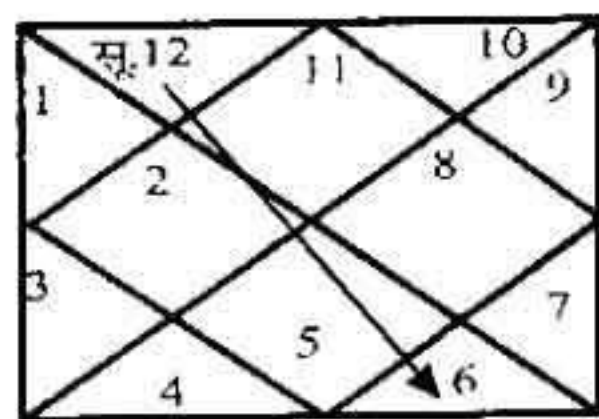
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। सूर्य अपने घर से आठवें एवं पितृ कारक स्थान नवम भाव से छठे होने से जातक की पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक का भाषा कठोर होगी। उसकी दाईं आंख कमजोर होगी। जातक को दंत रोग संभव है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसा व्यक्ति आलसी व कामी होता है। उसके हृदय में सदैव महिलाओं का ही ध्यान रहता है तथा वह प्रत्येक कार्य सुस्ती से प्रारम्भ करता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य-चंद्र की युति द्वितीय स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वितीय स्थान में होने से जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को भूमि व भाइयों से धन दिलायेगा। जातक को ससुराल से भी धन मिलता रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वितीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। उसकी आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के रहेंगे। विवाह के बाद जातक धनवान होगा। जातक की आयु लम्बी होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–स्वगृही बृहस्पति के साथ सूर्य **'कलत्रमूल धन योग'** बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ उच्च का शुक्र जातक को माता व पत्नी का पूर्ण सुख देगा। माता व पत्नी दोनों धनवान होंगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'मीन राशि' में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति धन भाव में होने से जातक को पत्नी द्वारा धन मिलेगा। धन संग्रह में कठिनाइयां आयेंगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनी होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु धन प्राप्ति में बाधक है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु धन संग्रह में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां तृतीय स्थान में उच्च का
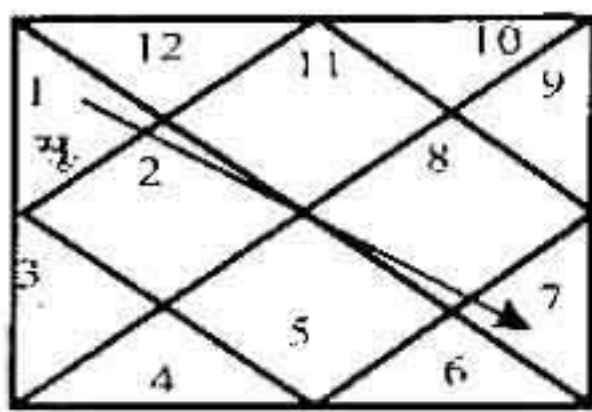
होगा। मेष राशि के दस अंशों तक सूर्य परमोच्च का कहलाता है। जातक स्वयं धनी व पराक्रमी होगा। जातक का जीवनसाथी भी धनी व पराक्रमी होगा। फलत: पति-पत्नी दोनों में अहम् का टकराव होता रहेगा। गृहस्थ जीवन में नोक-झोंक बनी रहेगी। जातक अपने प्रयत्न से खूब यश-कीर्ति अर्जित करेगा।

दृष्टि—सूर्य अपने स्थान से नवमें होकर नवम भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। ऐसे जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—जातक का ससुराल धनवान होगा। ऐसे जातक को पड़ौसी व मित्र अच्छे मिलेंगे।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा। जनसम्पर्क से लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति तृतीय स्थान में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। पर बड़े भाई का सुख नहीं होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक को परिजनों व मित्रों से लाभ होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। तृतीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठ कर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक भाई-बहनों, मित्र-परिजनों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धनवान होगा तथा समाज में अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन लाभ करायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र भाई-बहनों का सुख एवं पराक्रम में वृद्धि करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। सूर्य यहां उच्च का, शनि नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे-बड़े

दोनों भाइयों का सुख नहीं रहेगा। जाति के अलावा अन्य लोगों में बड़ी कीर्ति होगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु भाइयों में मनमुटाव एवं छोटे भाई के सुख को नष्ट करेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु समाज में बेहद कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
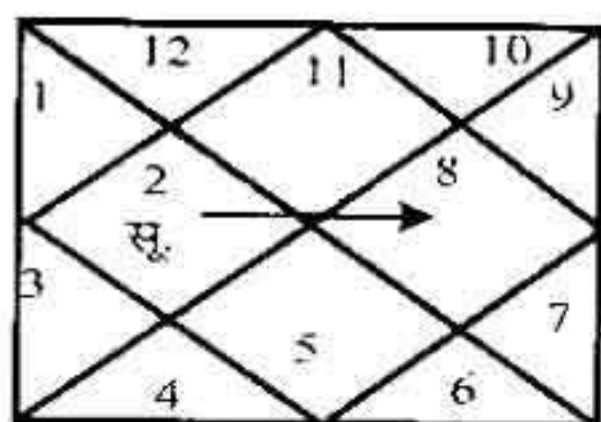
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां चतुर्थ स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य पितृ स्थान नवम भाव से आठवें स्थान पर होने से पिता के साथ मतभेद-मनमुटाव करायेगा। ऐसे जातक को जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। जातक को मकान का सुख भी उत्तम मिलेगा।

दृष्टि–सूर्य अपने स्थान से दसवें बैठकर दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर दृष्टि करेगा, फलत: सरकारी नौकरी या सरकारी द्वारा आर्थिक लाभ मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक के दांतों में कोई-न-कोई रोग अवश्य होगा।

दशा–सूर्य की दशा-महादशा अच्छी जायेगी पर सूर्य की दशा में हृदय रोग की संभावना प्रबल रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मध्यरात्रि 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति चतुर्थ भाव में होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। चतुर्थ स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध चतुर्थ होने से '**कुलदीपक योग**' बनेगा। यहां से दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलत: जातक पढ़ा-लिखा एवं पराक्रमी

होगा तथा उसकी बुद्धि तेज रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। भवन का सुख भी उत्तम होगा। जातक अपने कुल का नाम उत्तम कार्यों के कारण रोशन करेगा एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ स्वगृही शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा। माता-पिता का सुख पूर्ण रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'वृष राशि' में हैं। सूर्य शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। माता की मृत्यु छोटी आयु में होगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक की माता व सासु को बीमार करेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक की माता व पत्नी को बीमारी देगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
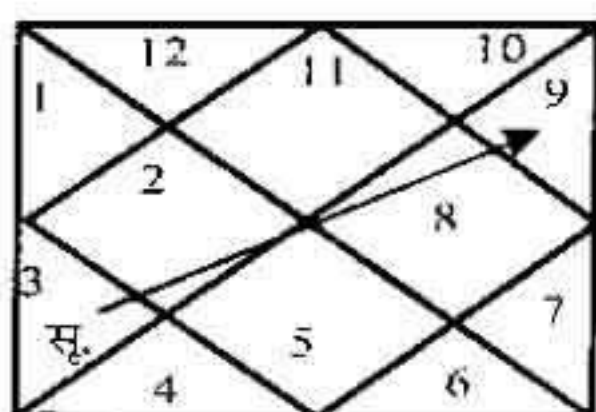
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां पंचम स्थान में मिथुन (सम) राशि में होगा। पितृ कारक तरीके नवम भाव से नवम स्थान पर होने से पिता के साथ अच्छे संबंध होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को जीवनसाथी बहुत अच्छा मिलेगा। जिसके साथ खूब निभेगी। जातक के मित्र भी अच्छे होंगे।

दृष्टि—सूर्य अपने स्थान से ग्यारहवें होकर ग्यारहवें स्थान (धनु राशि) पर दृष्टि करेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा। यदि कुण्डली में बृहस्पति की स्थिति अच्छी है तो जातक शेयर बाजार, लॉटरी, सट्टा से रुपया कमायेगा।

निशानी—जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या

की रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति पंचम भाव में होने से प्रथम संतति कन्या होगा अथवा प्रथम संतति का नाश होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल संतान सुख में वृद्धि करेगा। जातक के चार पुत्र होंगे।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। पंचम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। पंचम स्थान में बुध स्वगृही होकर लाभ भवन को देखेगा। फलत: जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक प्रजावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक की संतति भी शिक्षित रहेगी। जातक समाज का गणमान्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को विद्या से लाभ देगा। जातक के पांच पुत्र दो कन्या होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक की संतान तेजस्वी होगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में हैं। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति पंचम भाव में होने से जातक की प्रथम संतति की अकाल मृत्यु संभव है। एकाध गर्भपात संभव है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु पुत्र संतान में बाधक ग्रह का काम करेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गर्भपात करायेगा। प्रथम संतति शल्य चिकित्सा से होगी।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
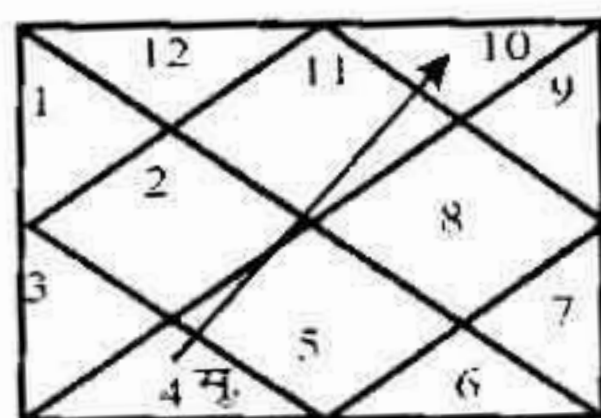
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य यहा अपने घर से बारहवें है अत: वैवाहिक सुख में बाधक है। सूर्य यहां '**विलम्बविवाह योग**' बना रहा है। प्रथमत: जातक का विवाह देरी से होगा अथवा विवाह होने पर भी वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होगा। पितृ कारक सूर्य नवम भाव से दसवें स्थान पर स्थित होने से पिता का सुख एवं सम्पत्ति जातक को मिलेगी पर जातक उसका उपयोग नहीं कर पायेगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक मुसाफिरी खूब करेगा व परदेश में कमायेगा।

निशानी–दाईं आंख कमजोर होगी। 'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसे जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति छठे स्थान में होने से चंद्रमा स्वगृही होकर **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। छठे स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। छठे स्थान में बुध की शत्रु राशि है। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। अष्टमेश बुध के छठे जाने से **'हर्षयोग'** बना। फलत: जातक अपने शत्रु-समूह को नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक बुद्धिमान होगा। सप्तमेश सूर्य के छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनता है। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु भारी संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'कर्क राशि' में हैं। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'**, **'विवाहभंग योग'** भी बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। विवाह विच्छेद की संभावना है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु गुप्तेन्द्रिय में बीमारी देगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु मूत्र संबंधी रोग या गुर्दे में रोग देगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
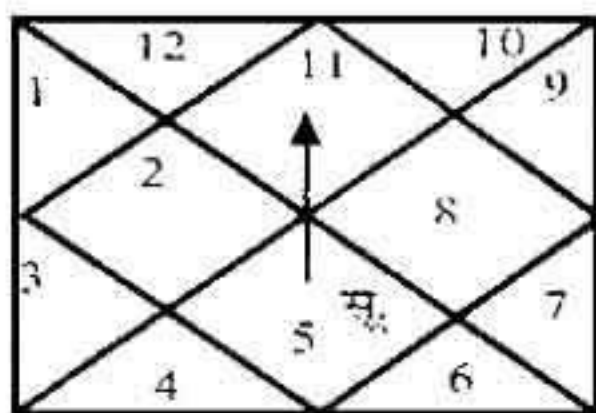
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर स्वगृही है। ऐसे जातक का विवाह शीघ्र होता है। उसके संतान भी शीघ्र होती हैं। जातक का ससुराल व पत्नी तेजस्वी होंगे, फलतः अहंकार का टकराव होता रहेगा। पत्नी तर्कीली स्वभाव की होगी। पितृ कारक सूर्य नवम भाव से ग्यारहवें स्थान पर होने के कारण पिता से बनेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति एवं राज (सरकार) की मदद भी मिलेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उग्र (तेज) स्वभाव का होगा पर कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार जातक वाचाल होगा एवं हृदयरोगी होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति सातवें स्थान में होने से सूर्य स्वगृही होगा। जातक की पत्नी धनी होगी। जातक को ससुराल से लाभ होता रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल विवाह में विलम्ब करायेगा। पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। सप्तम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। बलवान सप्तमेश की पंचमेश से युति होने के कारण जातक की संतति उत्तम होगी। पत्नी धनवान होगी। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा बुद्धिबल से अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति '**कलत्रमूल धनयोग**' बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा। विवाह के बाद जातक की नौकरी लगेगी या भाग्योदय होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में हैं। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि व सप्तमेश सूर्य की इस युति से पति-पत्नी के बीच अहम् का टकराव होगा। जातक की पत्नी कमाऊ एवं प्रभावशाली महिला होगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु विवाह विच्छेद या जीवन में बिछोह करा सकता है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गृहस्थ सुख में विलम्ब उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
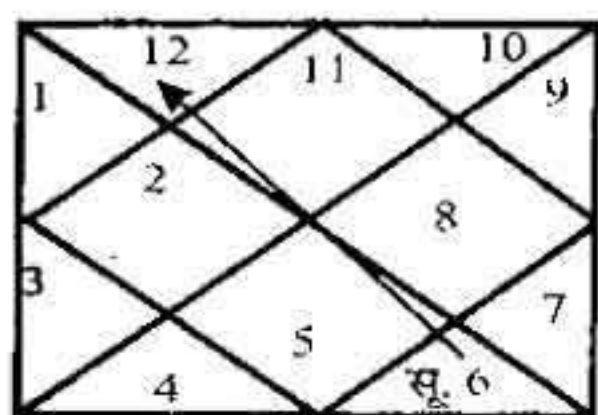
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां आठवें स्थान में कन्या (सम) राशि में होगा। सूर्य अपनी राशि से दूसरे एवं नवम भाव से बारहवें स्थान पर होगा। ऐसा जातक अनीति मार्ग (गलत कार्यों) से द्रव्योपार्जन करेगा। जातक के पिता की मृत्यु छोटी आयु में हो सकती है। जातक को पिता की सम्पत्ति, पिता का सुख नहीं मिल पायेगा। राजपक्ष से भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पायेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि द्वितीय भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी। जातक की बाईं आंख कमजोर रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति आठवें होने पर अंग-भंग का योग बनता है। अचानक दुर्घटना संभव है।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल विलम्ब विवाह करायेगा। **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** के कारण जातक परेशान रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**– **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। अष्टम भाव में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। अष्टम स्थान स्वामी बुध के अष्टम में स्वगृही होने से **'सरल योग'** बनेगा। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। सप्तमेश सूर्य के छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। जातक के शीघ्र विवाह व भाग्योदय में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। पर फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** करायेगा। जातक आर्थिक विषमताओं में घिरा रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यहीन योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। पति-पत्नी में दूरियां रहेंगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को विधुर बनायेगा। जातक की पत्नी की मृत्यु जातक के आखों के सामने होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक के गृहस्थ सुख में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
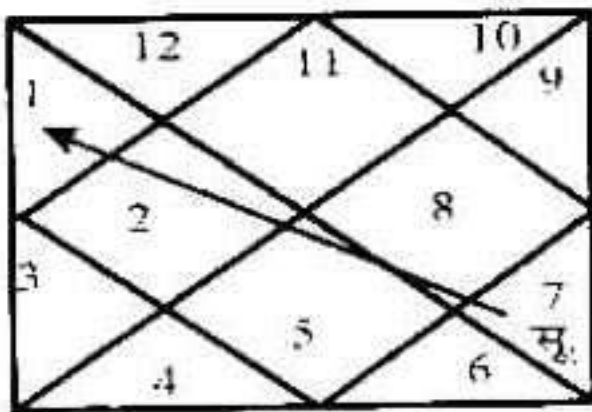
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां नवम स्थान में नीच का होगा। तुला राशि के दस अंशों में सूर्य परम नीच का होगा। ऐसे जातक का जीवन साथी उससे कम (कक्षा) स्तर का होगा। पिता के

लिए यह सूर्य शुभ नहीं है। पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जातक पिता से अलग रहेगा।

दृष्टि–नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातके के मित्र सब प्रकार से सक्षम व समर्थ होंगे।

निशानी–जातक का सही भाग्योदय विवाह के बाद होगा। पर जातक की पत्नी थोड़ी-थोड़ी बीमार रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति नवम स्थान पर होने से सूर्य नीच का होगा पर जातक भाग्यशाली एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को परम पराक्रमी बनायेगा। जातक धनवान होगा।
3. **सूर्य+बुध–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। नवम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक बुद्धिमान तथा भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे परिजनों-मित्रों का सहयोग बराबर मिलता रहेगा। जातक धनी होगा एवं समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों में गिना जायेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'तुला राशि' में है। सूर्य यहां नीच का तो शनि उच्च का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना। लग्नेश व सप्तमेश की नवम भाव में यह युति जातक को राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा पर पिता की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत विशेष रुप से चमकेगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को सरकारी नौकरी से वंचित करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को व्यापार में ले जायेगा।

विशेष–यहां शुक्र यदि केन्द्रस्थ हो तो जातक प्रेमविवाह करेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
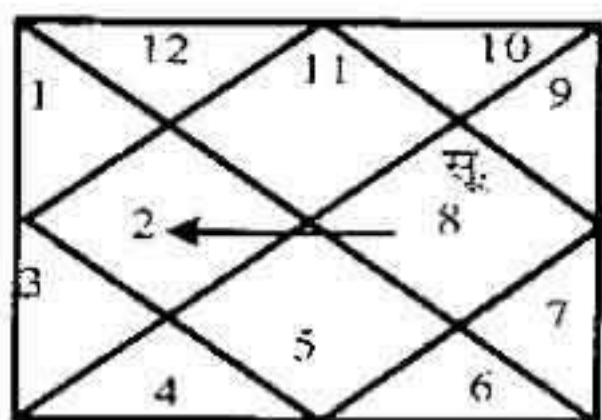
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां दशम स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि का होगा। सूर्य अपने स्थान से चौथे व पितृ भाव से दूसरे स्थान पर स्थित होकर जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं एवं संपन्नता देगा। जातक को जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। जातक को भागीदारी से लाभ होगा। जातक को अच्छी नौकरी, सरकार में ऊंचा पद मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को अच्छा मकान मिलेगा। अच्छे सहयोगी (नौकर) मिलेंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसे जातक को दंत रोग अवश्य होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। सूर्य जातक को रोजी रोजगार के नये अवसर प्रदान करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति दशम स्थान में होगी जहां चंद्रमा नीच का होगा। फिर भी ऐसा जातक पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल यहां **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। **'कुलदीपक योग'** के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम

दीपक के समान रोशन करेगा। जातक धनी, बुद्धिमान होगा एवं समाज के अग्रण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा। जातक स्वयं भी धनवान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को परम भाग्यशाली बनायेगा। व्यक्ति सरकार से मान-सम्मान अर्जित करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में हैं। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि और सप्तमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में होने से जातक को करोड़पति बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु राज-सरकार से दण्ड दिला सकता है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु सरकारी कार्य में बाधा डालेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
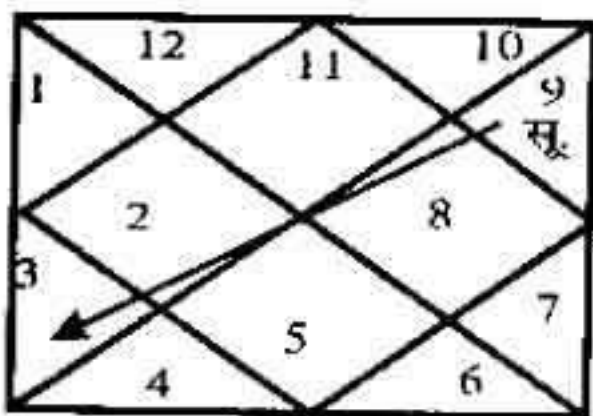
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां एकादश स्थान में धनु (मित्र) राशि में है। सूर्य यहां अपने स्थान से पांचवे एवं पितृ भाव से तीसरे स्थान पर है। जातक बुद्धिजीवी होगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी एवं भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी।

निशानी—जातक को एक पुत्र जरुर होगा। **'लोमेश संहिता'** अ. 7/श्लोक 5 के अनुसार ऐसे जातक का पुत्र जीवित नहीं रहेगा। पुत्र यदि कन्या संतति के बाद में हो तो ही जीवित रहेगा।

दशा—जातक को सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या

को दिन के 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति एकादश स्थान में होने से जातक का व्यवसाय में लाभ होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति एवं बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।

3. **सूर्य+बुध–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। एकादश स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली तथा व्यापार-वर्गीय होगा। जातक शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के ऐश्वर्य-संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को व्यापार में जबरदस्त लाभ देगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'धनु राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति एकादश स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगी। जातक के व्यापार-व्यवसाय में उन्नति विवाह के बाद होगी पर जातक सही अर्थों में धनपति पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु उद्योग या चलते व्यापार में रुकावट डालेगा। एक बार व्यापार बन्द करायेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु की युति विद्या एवं व्यापार में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
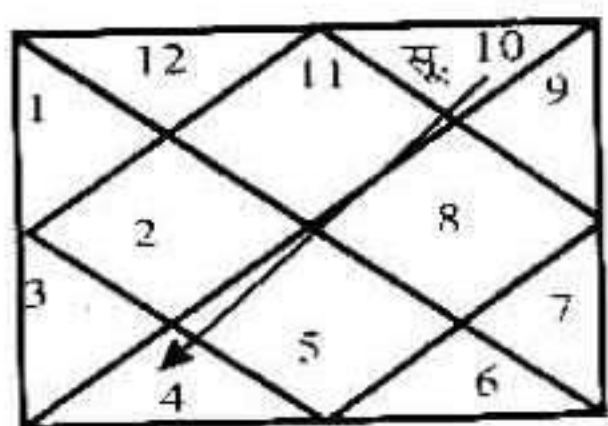
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है. फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां द्वादश स्थान में मकर (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। प्रथमत: ऐसे जातक का विवाह देरी से होगा। सूर्य अपने स्थान से छठे होने के कारण विवाह होने पर भी गृहस्थ सुख में विवाद (कलह) रहेगा। जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। पिता छोटी उम्र में ही गुजर जायेगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ सूर्य की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक अच्छी कमाई न कर सकेगा फलत: सदैव ऋणग्रस्त रहेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसे जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी। उसकी बाईं आंख कमजोर रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वादश स्थान में नेत्र पीड़ा एवं व्यर्थ की यात्राएं देगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ उच्च का मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को विवाह सुख में भयंकर दिक्कतें आयेंगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वादश भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली एवं यात्रा-प्रिय होगा। जातक को जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। अष्टमेश बुध बारहवें होने से **'सरल योग'** बना। ऐसे जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है तथा वह दीर्घजीवी होता है। सूर्य बारहवें होने से जातक का विवाह विलम्ब से होगा। फिर भी जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ नीच का बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक आर्थिक विषमताएं भोगेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करेगा। जातक भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु परेशान रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'मकर राशि' में हैं। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति से **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन में बिछोह व तनाव की स्थिति रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु यात्रा में चोरी, पत्नी की मृत्यु या पत्नी से तलाक करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु विवाह में विवाद या विच्छेद करायेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
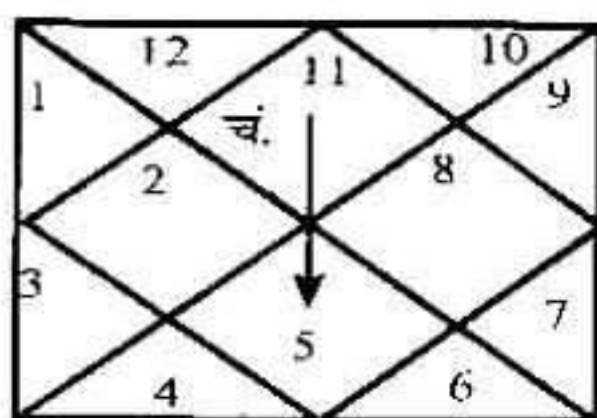
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपने स्थान (कर्क राशि) में **'षडाष्टक योग'** करके बैठा है। ऐसा जातक नाजुक शरीर तथा स्वतंत्र विचारों वाला होता है। ऐसा जातक ऋण व रोग से त्रस्त रहेगा। जातक में व्यवहार कुशलता एवं उच्च सामाजिक स्तर का अभाव होता है। जिसके कारण उसके विरोधी उत्पन्न होते रहते हैं।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर है। जातक के गृहस्थ जीवन में खटपट रहेगी। जातक को माता का सुख कमजोर मिलेगा। जातक परदेश जाकर बसेगा।

निशानी–जातक की पत्नी सुंदर होगी पर पति-पत्नी दोनों में वैचारिक मतभेद रहेंगे।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति लग्न में होने से जातक का जीवनसाथी अत्यधिक सुन्दर, आकर्षिक व्यक्तित्व का धनी एवं वफादार होगा।

2. **चंद्र+मंगल**—चंद्रमा के साथ मंगल **'लक्ष्मी योग'** बनायेगा। जातक धनी होगा। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसको भौतिक उपलब्धियां सुख-साधनों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा परन्तु उसकी आर्थिक उन्नति विवाह के बाद ही होगी।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को प्रखर कल्पना शक्ति के साथ तेज बुद्धि देगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में शुभ है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के प्रथम स्थान में यह युति कुंभ राशि में ही होगी। बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि हो रही है। फलत: ऐसे जातक का पहला भाग्योदय विवाह के बाद होता है। दूसरा भाग्योदय संतति के बाद होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसकी गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को माता का सुख देगा। ऐसा जातक ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीयेगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु जातक को पूर्वाग्रही बनायेगा एवं रोग एवं शत्रु से जातक परेशान रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**—ऐसा जातक स्थाई रूप से रोगी रहेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
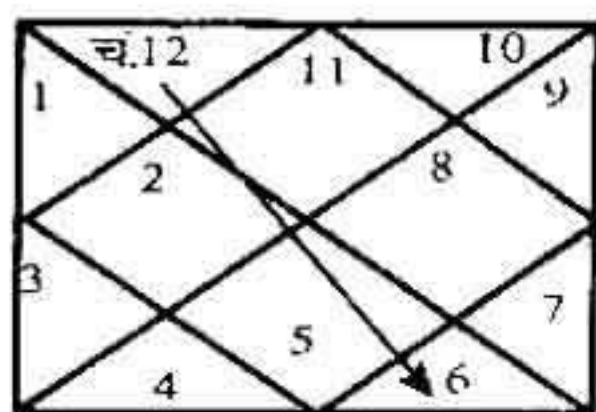
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपने घर से नवम स्थान पर होने से शुभ फलदाई है। जातक की वाणी विनम्र होगी। माता के साथ अच्छे संबंध होंगे। मामापक्ष या ननिहाल से जातक को आर्थिक सहायता मिलेगी। जातक साहित्य का शौकीन व अनेक भाषाओं का जानकार होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जलभय रहेगा। जल में दूर रहना ही हितकर है।

निशानी–ऐसा जातक युद्ध, कलह एवं विवाद से दूर रहना पसंद करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा सामान्य जायेगी। पाप ग्रहों के सान्निध्य व प्रभाव से चंद्रमा मारक बन सकता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वितीय स्थान में होने से जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–चंद्रमा के साथ मंगल '**लक्ष्मीयोग**' बनायेगा। जातक धनवान होगा। यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह की दृष्टि पंचम स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक धनवान होगा। सौभाग्यशाली भी होगा एवं लम्बी उम्र का मालिक होगा। परन्तु जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक धनी तथा विद्यावान होगा एवं विनम्र वाणी का स्वामी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के द्वितीय स्थान में यह युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक इस योग के कारण दुर्घटना व अपघात से बचा रहेगा शत्रुओं का नाश करेगा। जातक को राज्य सरकार में मान-सम्मान मिलेगा। कोर्ट-कचहरी में विजय श्री का वरण होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को धनी एवं परम सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक अपने पुरुषार्थ पराक्रम से काफी धन कमायेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु धन की बरकत नहीं होने देगा। जातक आर्थिक परेशानियों में रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु आर्थिक विषमताओं का द्योतक है।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
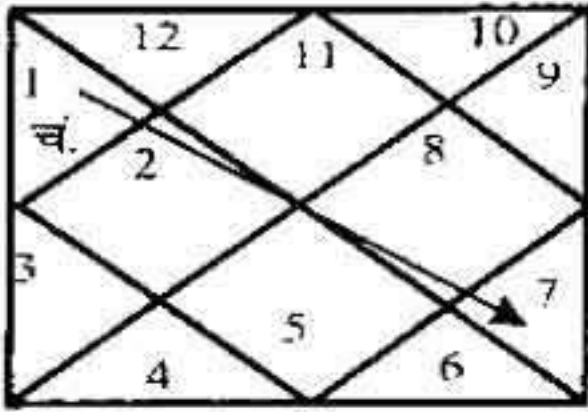
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। चंद्रमा अपने घर से दशम स्थान पर होगा अत: ऊर्जावान होगा। यहां चंद्रमा को षष्टेश होने का दोष नहीं रहता। जातक क्रान्तिकारी विचारों वाला एवं पराक्रमी होता है। चंद्रमा मातृ कारक, तरीके चौथे भाव से बारहवें स्थान पर होने के कारण, माता का सुख कमजोर होगा। माता की मृत्यु छोटी उम्र में ही संभव है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि नवम भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय तीव्र गति से होता है। जातक विरोध एवं विरोधियों से नहीं धबराता।

निशानी–ऐसे जातक का पिता धनवान तथा यशस्वी होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी।

दशा–चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति तृतीय स्थान में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां दोनों ग्रह तृतीय स्थान में मेष राशि के होंगे। मेष राशि में मंगल स्वगृही होगा। फलत: '**महालक्ष्मी योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव (कर्क राशि), भाग्य भाव (तुला राशि) एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक यहां धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-कहचरी में सदैव विजय प्राप्त करने वाला भाई-बहनों से युक्त होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा। जातक के मित्र बहुत होंगे।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के तृतीय स्थान में यह युति 'मेष राशि' के अंतर्गत हो रही है। बृहस्पति+चंद्र

की यह युति षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्यभवन एवं लाभस्थान को देखेंगे। फलत: ऐसे जातक का भाग्योदय 24वें वर्ष में अथवा विवाह के तत्काल बाद होता है। व्यापार-व्यवसाय द्वारा धन की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होता है। उसकी गिनती समाज के गिने-चुने भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को उत्तम पराक्रम के साथ परम सौभाग्यशाली भी बनायेगा।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि की युति जीर्ण रोग उत्पन्न करेगी। वायु विकार रहेगा।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु की युति से जातक को क्षय रोग होगा। फेफड़ों में बीमारी रहेगी।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु की युति छाती में दर्द देगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
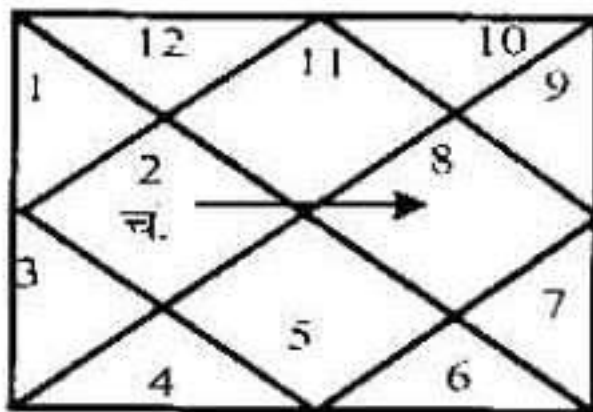
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां चौथे स्थान में उच्च का है। वृष राशि के तीन अंशों में चंद्रमा परमोच्च का कहलाता है। ऐसे जातक की कुण्डली में **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि होती है। जातक को मकान, वाहन का सुख श्रेष्ठ होता है पर मातृ कारक तरीके कारक में होने से माता का सुख कमजोर मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक को चंद्रमा से संबंधित धंधों में लाभ होगा। यथा मेडिकल, दवा, केमिकल, जल से उत्पन्न वस्तु, रत्न-ज्वेलरी, होटल के कार्य, खाद्य सामग्री के धंधों में लाभ होगा।

निशानी–ऐसा जातक अपने शत्रु को भी क्षमा कर, उससे प्रेम करता है। जातक क्षमाशील होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

को मध्यरात्रि 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति चतुर्थ भाव में होने से **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होकर **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। मंगल यहां दिक्बली होने से **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय व उद्योग में प्रतिष्ठित होगा तथा राज्य (सरकार) या राजनीति में पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को माता, भवन एवं वाहन का पूर्ण सुख देगा। ऐसा जातक बहुत अच्छा 'प्लानिंग मास्टर' होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार बृहस्पति+चंद्र की युति यहां चतुर्थ भाव में वृष राशि के अंतर्गत हो रही है। यह युति वस्तुत षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा केन्द्र स्थान में इन तीनों ग्रहों की उपस्थिति के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। ये दोनों ग्रह यहां अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव का पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक का दुर्घटना एवं आघात से बचाव होता रहेगा। जातक समाज के शुभकार्य, परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में रुपया खर्च करता रहेगा। जातक का राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट-कचहरी में दबदबा बना रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक'** उत्तम कोटि का राजयोग बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली, सौभाग्यशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त करेगा। जातक परिश्रमी होगा। ऐसा जातक कहीं भी हो मरते वक्त स्वदेश जरुर लौटेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु जातक की माता को अकाल मृत्यु देगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु वाहन दुर्घटना दे सकता है।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां पंचम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। चंद्रमा अपने घर (कर्क राशि)
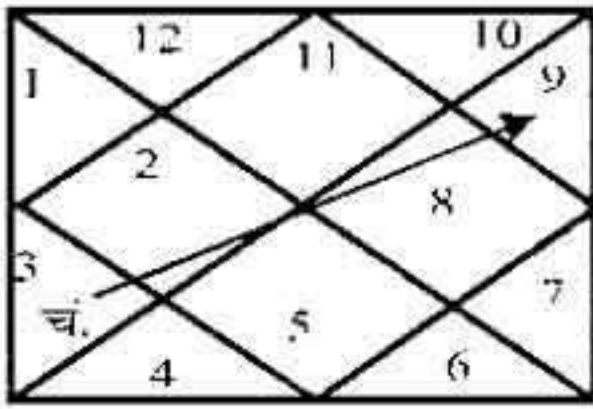
से बारहवें स्थान पर होंगे। ऐसे जातक प्राय: चंचल व चपल होते हैं तथा अपनी बात को बदलने में देरी नहीं लगती। पुरुषार्थ की कमी रहती हैं। जातक की प्रारम्भिक शिक्षा में बाधा आयेगी। जातक मंत्र-तंत्र का जानकार होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक का मित्र वर्तुल विस्तृत होगा। सड़क चलते लोग जातक के अनायास मित्र बन जाते हैं।

निशानी–ऐसे जातक के कन्या संतति अधिक होगी एवं पुत्र संतान का प्राय: जब तक कोई शुभ योग न हो अभाव बना रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति पंचम भाव में होने से प्रथम संतति कन्या होगी अथवा प्रथम संतति का नाश होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कन्या राशि), लाभ स्थान (धनु राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। प्रजावान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। अच्छे व्यापार व्यवसाय का स्वामी होगा। परन्तु जीवन में खर्च की बाहुल्यता रहेगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के पांचवें स्थान में यह युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन स्थान को देखेंगे। फलत: जातक परिश्रमी होगा तथा उसे धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी परन्तु धन का खर्च शुभ कार्यों में, परोपकार के कार्यों में होता रहेगा। जातक का राज्यपक्ष सरकार से सम्मान मिलता रहेगा। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को विद्या, संगीत, अभिनय व लेखन कार्य में सफलता दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को उत्तम संतति का सुख देगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु की युति संतान प्राप्ति में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
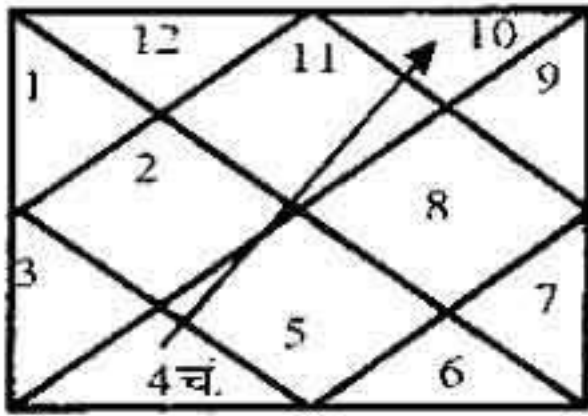
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में स्वगृही होगा। षष्टेश के षष्टम में स्वगृही होने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनवान व भौतिक सुख-सुविधाएं से युक्त होगा। जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जायेगी। जातक को माता का सुख नहीं मिल पायेगा। चंद्रमा यहां जलतत्त्व में होने से जातक नशेबाज (शराबी) होगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। गुप्त शत्रु जातक को परेशान करेंगे। जातक को मामा व मौसी का सुख प्राप्त होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 1 के अनुसार ऐसा मनुष्य अपनी जाति, स्वजन, इष्टमित्र, संबंधियों के साथ शत्रु (दुश्मन) जैसा व्यवहार करता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति छठे स्थान में होने से चंद्रमा स्वगृही होकर **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी मानी, अभिमानी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** भी बनेगा। फलत: जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान

(तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं लग्न भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली तथा लगातार उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने वाला होगा। परन्तु अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **सरल नामक विपरीत राजयोग** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। पर प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के छठे स्थान में यह युति कर्क राशि में हो रही है। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होगा। दु:स्थान में दु:स्थान के स्वामी का जाना शुभ माना गया है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धनभाव को देखेंगे। फलत: जातक धन तो कमायेगा पर धन शुभ कार्यों में खर्च होता रहेगा। बचत कम होगी। राज्यपक्ष सरकार से, सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। इस शुभ योग के कारण जीवन में संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलेगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक की आयु को घटायेगा।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक के प्रकट शत्रु बहुत होंगे।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु गुप्त शत्रुओं की संख्या में वृद्धि करेगा।

विशेष—चंद्रमा छठे और शनि आठवें हों तो जातक की उम्र कम होगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
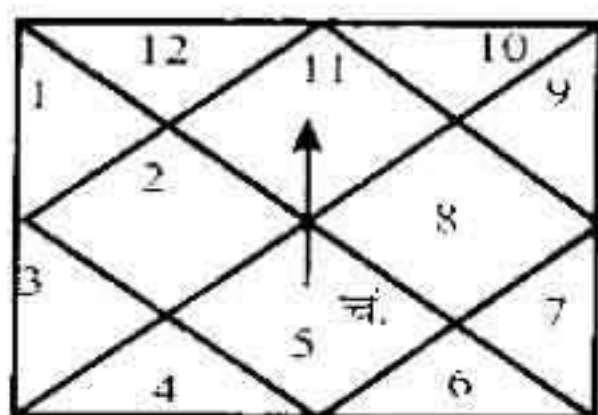
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां सातवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। यहां चंद्रमा अपने घर (कर्क राशि) से दूसरे स्थान पर है। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक को जीवनसाथी सुन्दर मिलेगा। वैवाहिक सुख उत्तम होगा। जातक परदेश जाकर अच्छा धन कमायेगा। भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।

निशानी–ऐसा जातक प्रेम विवाह करेगा। **'लोमेश संहिता'** अ. 6/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक धनवान एवं कीर्तिवान् होता है।

दशा–चंद्रमा केन्द्रस्थ होने से उसकी दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति सातवें होने से सूर्य स्वगृही होगा। जातक की पत्नी धनी होगी। जातक को ससुराल से लाभ होता रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न स्थान (कुंभ राशि) एवं धन स्थान (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा जातक उद्यम करके धन कमायेगा तथा निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर बढ़ता रहेगा। जातक की आर्थिक स्थिति में सुधार विवाह के बाद होगा। जातक का राजनीति में भी वर्चस्व रहेगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को सुन्दर एवं पढ़ी-लिखी पत्नी देगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के सप्तम स्थान में यह युति सिंह राशि के अंतर्गत होगी। सिंह राशि में यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को धन लाभ होगा तथा उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में बराबर लाभ होता रहेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक का जीवनसाथी सौभाग्यशाली एवं सुंदर शरीर वाला होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु दाम्पत्य सुख में कटुता लायेगा। बिछोह की स्थिति भी आ सकती है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु दाम्पत्य सुख में विषमता उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
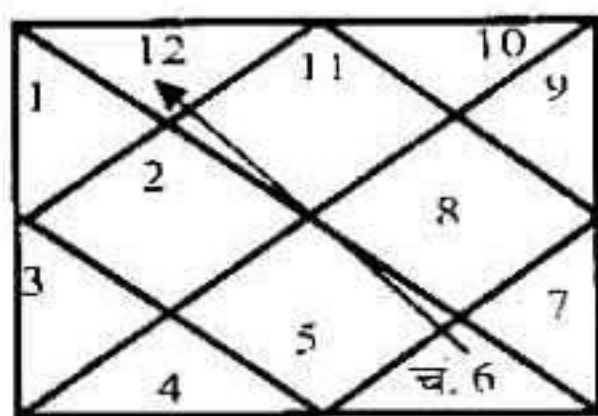
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति में **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनवान एवं भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त सम्पन्न व्यक्ति होगा। ऐसा जातक परदेश जाकर अच्छा कमाता है। जातक को माता का सुख नहीं के बराबर होगा। 'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक सदैव बीमार रहता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की भाषा मीठी व विनम्र होगी।

निशानी–जातक को पेट, प्रोस्टेट, मूत्राशय की बीमारी होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति आठवें होने पर अंग-भंग का योग बनता है। अचानक दुर्घटना संभव है।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा पर षष्टेश होकर चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। मंगल के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन स्थान (मीन राशि) एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। निसन्देह मंगल की यह स्थिति ज्यादा सुखद नहीं है। जातक धनवान तो होगा पर भाई कुटम्बियों से त्रस्त रहेगा। कोर्ट-कचहरी में शत्रु परेशान करते रहेंगे।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** उत्पन्न करता है। जातक को संतान संबंधी चिंता व परेशानी रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के आठवें स्थान में यह युति कन्या राशि के अंतर्गत हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'धनभंग**

योग' एवं 'लाभभंग योग' बना। चंद्रमा शत्रु क्षेत्री है। परन्तु षष्टेश चंद्र का आठवें जाना शुभ संकेत है। ये दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख स्थान पर है। फलत: ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसमें रोग से संघर्ष करने की पूर्ण शक्ति होती है। जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी। जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करेगा। जातक को भौतिक सुख की प्राप्ति कठिनता से होगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक निश्चय ही धनी एवं साधन सम्पन्न होगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं की वृद्धि करेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को गुप्त रोग या गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में
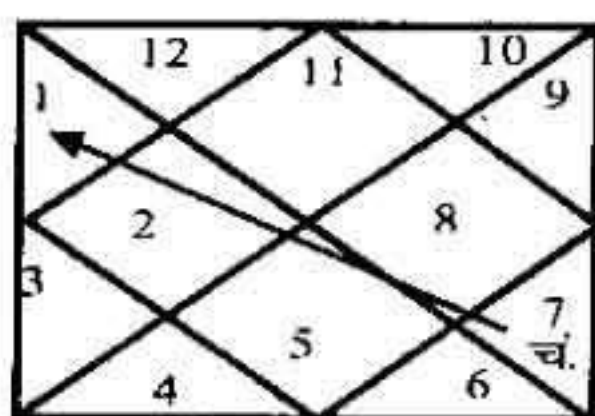
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां नवम स्थान में तुला (सम) राशि में है। यहां चंद्रमा अपनी राशि में चौथे स्थान पर है। फलत: माता के साथ संबंध ठीक होंगे। 'लोमेश संहिता अ. 6/श्लोक 4 के अनुसार ऐसे जातक को कभी व्यापार में हानि नहीं होती। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

दृष्टि–नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा तथा उसे धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, माता-पिता का पूरा-पूरा सुख मिलेगा।

निशानी–जातक को मामा के यहां से लाभ, अपने से नीचे काम करने वाले से लाभ प्राप्त होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**– **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की दोपहर 4 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति नवमें स्थान

पर होने से सूर्य नीच का होगा पर जातक भाग्यशाली एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह तुलाराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (खर्च स्थान), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं चतुर्थ स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। पराक्रमी होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा। जीवन में सभी प्रकार के भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में ही हो जायेगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक का भाग्योदय अर्जित विद्या द्वारा होगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के नवमें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुलाराशि में होंगी। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्नस्थान, पराक्रमस्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक खुद पढ़ा-लिखा होगा। उसको पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा उसकी संतानें भी पढ़ी लिखी होगी। जातक का सर्वांगीण विकास चहुं ओर से होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ स्वगृही शुक्र जातक को माता-पिता का सुख व सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि उच्च का होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। उसके पास उत्तम वाहन होंगे।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक की महत्वाकांक्षाएं सार्थक होगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
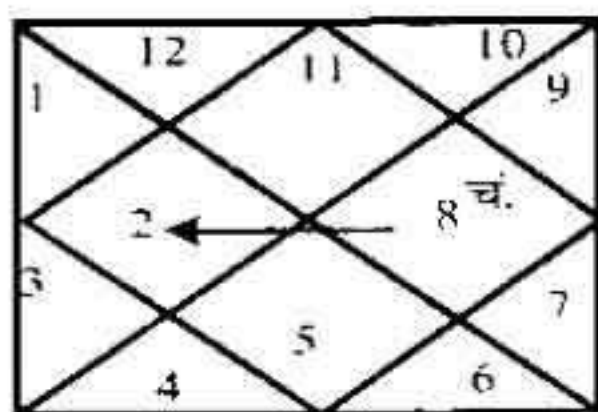
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां दशम स्थान में नीच का होगा। वृश्चिक के तीन अंशों पर चंद्रमा परम नीचक का होता है। चंद्रमा यहां **'दिग्बल'** से शून्य होता है। फलत: सांसारिक सुख एवं संतान सुख में न्यूनता देता है। जातक को विद्या का सुख उत्तम। जातक को विषभोजन का भय रहता है।

दृष्टि–दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थभाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को निजी भवन एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक चंद्रमा संबंधी कार्यों से धन लाभ प्राप्त करेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 5 के अनुसार ऐसे जातक को परदेश में अच्छा लाभ मिलेगा। जातक प्रखर वक्ता होगा।

दशा–यहां केन्द्रवर्ती होने से चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशवें स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति दशमें स्थान में होगी। जहां चंद्रमा नीच का होगा। फिर भी ऐसा जातक पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। मंगल दिक्बली होकर **'कुलदीपक योग'** भी बनायेगा। 'पद्मसिंहासन योग' होने से यहां **महालक्ष्मी योग** की सृष्टि हुई। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। दोनों ग्रह की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ उत्तम वाहन व भौतिक सुखों को प्राप्त करेगा। जातक की संतान भी प्रतिष्ठित होगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं नौकर का सुख मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के दसवें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति वृश्चिक राशि में हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति, वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा नीच राशि में होगा। ये दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होकर **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** बनाते हुए धनस्थान, सुखस्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा। धनप्राप्ति होती रहेगी। जातक सांसारिक सभी सुख संसाधन सहज में प्राप्त होंगे। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक शत्रु का